आधी चीज़ें...

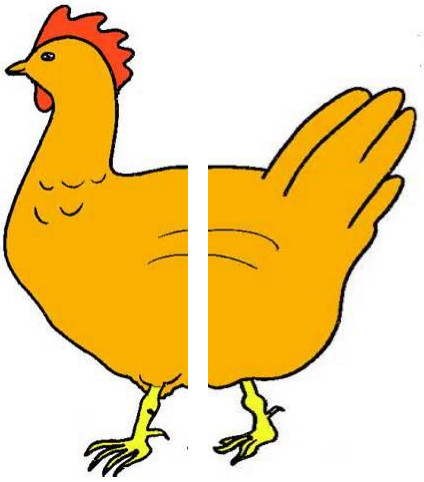

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Aadhee Cheezon Ki Kahaniyan (Stories of Half things)
Cover Page picture : Half Rooster
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5
आधी चीज़ें 7
1 छोटा आधा मुर्गा 9
2 आधा मुर्गा–1 22
3 आधा मुर्गा–2 32
4 आधा कम्बल 47
5 आधा नौजवान 52
6 एक लावारिस लड़की 66
7 आधा आधा 81

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

आधी चीज़ें

तुम लोगों ने आधी आधी चीज़ों का नाम कभी नहीं सुना होगा। यहॉ हम तुम्हारे लिये कुछ ऐसी लोक कथाऐं दे रहे हैं जिनमें सारी चीज़ें आधी आधी हैं – आधा मुर्गा, आधा आदमी आदि आदि। लो पढ़ो ये आधी चीज़ों की कहानियॉ कि आधी आधी चीजें कैसे तो हुईं और फिर कैसे उन्होंने अपना काम चलाया।

आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इन आधी चीजों की लोक कथाओं के संग्रह का पिछले कई संग्रहों की तरह से भव्य स्वागत होगा।

1 छोटा आधा मुर्गा[1]

आधी चीज़ों की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के स्पेन देश की लोक कथाओं से ली गयी है और यह वहाँ की एक बहुत ही मशहूर और लोकप्रिय लोक कथा है। तो लो तुम भी पढ़ो वहाँ की यह लोक कथा हिन्दी में।

स्पेन[2] में एक मुर्गी सुबह से अपने बड़े से घोंसले में अपने बहुत ही खास अंडों के ऊपर बैठी हुई थी।

वे अंडे खास इसलिये थे क्योंकि ये अंडे वह पहली बार से रही थी। इससे पहले उसके अंडे एक किसान ले जाया करता था और उसका अपना बच्चा कहने के लिये कोई नहीं था।

सुबह ही उसके एक अंडे में से एक बच्चा निकला था। वह बहुत ही प्यारा चूज़ा था छोटे छोटे पंखों से ढका हुआ। उसके बाद उसके और भाई बहिन भी आना शुरू हो गये।

उसके सब बच्चे पहले बच्चे के बराबर ही सुन्दर थे और वह मुर्गी अपने बच्चों को देख कर बहुत खुश थी।

---

[1] Little Half-Chick – a folktale from Spain, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=56
Retold and written by Mike Lockett.

[2] Spain is a country on the Western coast of Europe

अब वह अपने आखिरी अंडे पर बैठी हुई थी कि उसने उसके लुढ़कने की आवाज सुनी और साथ में अन्दर से खट खट की आवाज भी।

और फिर वह अंडा टूट गया और बच्चे की चोंच का आखिरी हिस्सा उसको दिखायी दिया। जैसे जैसे वह बच्चा उस अंडे में से बाहर निकलता रहा धीरे धीरे उस अंडे का खोल टूटता रहा। और उसके बाद मॉ ने बच्चे की "पीप" की आवाज सुनी।

पर उस बच्चे को देख कर मॉ मुर्गी की खुशी चिन्ता में बदल गयी क्योंकि यह बच्चा उसके और सब बच्चों से अलग था। वह अभी भी उसके पंखों के नीचे था।

यह चूज़ा ऐसा लग रहा था जैसे कि वह दो हिस्सों में बॅटा हुआ हो। क्योंकि वह केवल आधा ही चूज़ा था। उसकी केवल एक टॉग थी, एक पंख था और एक ऑख थी।

उसने सोचा — "ओह बेचारा मेरा बच्चा, यह तो केवल आधा ही चूज़ा है। यह तो कभी ठीक से बड़ा भी नहीं होगा और कभी अपने दूसरे भाइयों और बहिनों जैसा भी नहीं हो पायेगा।

इसके भाई बहिन तो अपने आप खेतों आदि में खूब दौड़ेंगे पर इसको हमेशा ही घर के आस पास ही रहना पड़ेगा जहॉ मैं उसकी देखभाल कर सकूॅ।"

उसको देख कर वह बहुत दुखी हो गयी पर वह क्या करती। वह उसको हमेशा आधा चूज़ा कह कर ही बुलाती।

हालॉकि वह आधा चूज़ा देखने में बहुत अजीब सा और मजबूर सा लगता पर वह अपनी मॉ की देखभाल में नहीं रहना चाहता था। वह अपनी मर्जी की करता था और मॉ का कहा नहीं मानता था।

जब मॉ और सब चूज़ों को बुलाती तो वे सब उसके पास तुरन्त ही आ जाते पर वह आधा चूज़ा जब उसकी इच्छा होती तभी आता और बाकी समय उसकी आवाज़ को सुना अनसुना कर देता।

वह यह दिखाने के लिये एक तरफ को घूम जाता कि क्योंकि उसका एक ही कान था इसलिये उसने उसकी आवाज सुनी ही नहीं।

जब उसकी मॉ अपने बच्चों को ले कर घूमने निकलती तो आधा चूज़ा कहीं झाड़ी में छिप जाता या फिर किसी मक्की के खेत में छिप जाता।

इससे सब चिन्ता में पड़ जाते कि वह आधा चूज़ा कहॉ गया पर मॉ मुर्गी का दिल कभी उसको सजा देने को नहीं करता। ना ही वह कभी उससे गुस्सा होती।

उसको हमेशा ही ऐसा लगता कि उसकी यह हालत केवल उसकी अपनी वजह से थी क्योंकि उसने उसको अपना कहना मानना नहीं सिखाया था। और इसी लिये उसका बर्ताव दिन पर दिन और बुरा होता जा रहा था।

वह आधा चूज़ा जिस किसी से भी मिलता उसी के साथ बुरा बर्ताव करता और इस तरह से वह किसी को भी अच्छा नहीं लगता था। वह दूसरे चूज़ों और जानवरों से लड़ता भी बहुत था।

जब मॉ मुर्गी अपने दूसरे चूज़ों को बाहर घुमाने ले जाती तो वह गायब हो जाता जिससे उसकी मॉ को चिन्ता हो जाती।

उसके भाई बहिन यह सोचते कि शायद वह हमेशा के लिये ही गायब हो गया हो और फिर वापस न आये खास कर के जब जबकि उनकी मॉ हमेशा उनको यह याद दिलाती रहती कि वह एक खास चूज़ा है और उससे कोई आशा रखना बेकार है।

पर उसके अन्दर खास चीज़ केवल एक यही थी कि वह बहुत नीच था नहीं तो वह आधा चूज़ा सबके साथ मिल कर रहता।

एक बार वह आधा मुर्गा खेतों से मुर्गीखाने में आया और अपनी मॉ से बोला — "मॉ, मैं इस मुर्गीखाने और यहॉ की हर चीज़ से थक गया हूँ सो मैं मैड्रिड[3] जा रहा हूँ राजा के पास, उसके महल में रहने के लिये।

मेरे जैसे खास मुर्गे को खास जगह पर ही रहना चाहिये। तुम देखना कि एक दिन मैं इतना बड़ा हो जाऊँगा कि सब मेरे नीचे होंगे।"

[3] Madrid is the capital of Spain where its King and Queen also live.

उसकी माँ बोली — "बेटे, तुम मैड्रिड नहीं जा सकते। मैड्रिड बहुत दूर है और तुम्हारे तो केवल एक ही टाँग है और एक ही पंख है। तुम वहाँ तक जाते जाते थक जाओगे।"

हालाँकि उसके भाई बहनों को यह सब बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था जैसा कि वह कर रहा था पर फिर भी उन्होंने उससे रुक जाने के लिये कहा और उनकी अन्दर से भी यही इच्छा थी कि उसको कोई नुकसान न पहुँचे।

पर वह आधा मुर्गा तो किसी की सुन ही नहीं रहा था। वह बोला — "देखना, मैं किसी दिन तुम सबको महल में बुला लूँगा।" और वह अपनी एक टाँग पर कूदता हुआ और अपना एक पंख फड़फड़ाता हुआ वहाँ से चल दिया।

पीछे से उसकी माँ चिल्लायी — "सबके साथ अच्छी तरह से रहना बेटे।"

पर जैसी कि उसकी आदत थी वह तो अपने आप में ही खोया रहता था और इस समय तो वह वैसे भी जल्दी में था। उसने तो पीछे मुड़ कर बाई बाई कहने की भी चिन्ता नहीं की।

चलते चलते वह एक छोटे नाले के पास से गुजरा। उस नाले में बहुत सारी घास और पानी के पौधे उग आये थे जिससे उसके पानी का बहाव कुछ रुक सा गया था।

उस नाले का पानी बोला — "ओ आधे मुर्गे, क्या तुम मेहरबानी कर के मेरे अन्दर से ये घास और पौधे बाहर निकाल दोगे

ताकि में ठीक से बह सकूँ? मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो। अगर तुम आज मेरी सहायता करोगे तो किसी दिन मैं भी तुम्हारी सहायता करूँगा।"

आधा मुर्गा बोला — "मुझे किसी की सहायता की जरूरत नहीं है। मैं तुम्हारी सहायता में अपना समय बर्बाद नहीं कर सकता। मैं तो राजा को मिलने के लिये मैड्रिड जा रहा हूँ। तुम यह सब कूड़ा अपने आप ही निकाल लो।"

और वह चलता चला गया कूदता और अपने पंख फड़फड़ाता हुआ राजा को देखने के लिये।

कुछ देर बाद वह एक आग के पास आ पहुँचा जिसको कैम्प लगाने वाले जंगल में जलता छोड़ गये थे। वह अब बहुत धीरे धीरे जल रही थी और बस अब बुझने ही वाली थी।

उसने आधे मुर्गे को वहाँ से जाते देखा तो चिल्लायी — "ओ आधे मुर्गे, मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो। क्या तुम मेरे अन्दर कुछ लकड़ियाँ नहीं डालोगे?

अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो मैं बुझ जाऊँगी। और अगर तुम कुछ लकड़ी मेरे अन्दर डाल दोगे तो मैं किसी दिन तुम्हारे काम आऊँगी।"

आधा मुर्गा बोला — "मुझे किसी की सहायता की जरूरत नहीं है। मैं तुम्हारी सहायता में अपना समय बर्बाद नहीं कर सकता। मैं

तो राजा से मिलने के लिये मैड्रिड जा रहा हूँ। तुम अपने लिये लकड़ियाँ अपने आप इकट्ठी कर लो।"

और वह चला गया कूदता और अपने पंख फड़फड़ाता हुआ राजा को देखने के लिये। उसके बाद चलते चलते वह एक पेड़ के पास आ पहुँचा। आधे मुर्गे ने उसमें से आती हुई एक कराह की आवाज सुनी।

जब उसने ऊपर की तरफ देखा तो देखा कि हवा उस पेड़ की शाखाओं में उलझ कर रह गयी है।

हवा बोली — "ओ आधे मुर्गे, मैं यहाँ इस पेड़ की शाखाओं में अटक गयी हूँ। मेहरबानी कर के यहाँ ऊपर आ कर इन शाखाओं को जरा हटा दो ताकि मैं यहाँ से निकल जाऊँ। इसके बदले में मैं एक दिन तुम्हारी सहायता ज़रूर करूँगी।"

आधा मुर्गा बोला — "मुझे किसी की सहायता की जरूरत नहीं है। मैं तुम्हारी सहायता में अपना समय बर्बाद नहीं कर सकता। मैं तो राजा से मिलने के लिये मैड्रिड जा रहा हूँ। तुम ये शाखाएँ अपने आप हटा लो।"

और वह चला गया कूदता और अपने पंख फड़फड़ाता हुआ राजा से मिलने के लिये।

आखिर वह एक ऐसी जगह आ पहुँचा जहाँ से वह स्पेन की राजधानी मैड्रिड देख सकता था।

उसको देख कर वह बोला — "यही मेरी जगह है। मैं यहाँ से ऊँचा खड़ा हो कर इस शहर को रोज देखूँगा न कि उस बेवकूफ मुर्गीखाने में कूदता रहूँगा। मुझे मालूम है कि राजा मुझे देख कर बहुत खुश होगा।"

वह कूदा, उसने अपने पंख फड़फड़ाये और शहर के दरवाजे में घुसा। शहर में घुस कर उसने बहुत सारी बहुत शानदार इमारतें देखीं और बहुत सारे सुन्दर सुन्दर घर देखे।

वह कूदता और अपने पंख फड़फड़ाता हुआ एक सबसे सुन्दर घर के पास आया। उस घर के चारों तरफ ऊँची ऊँची दीवार थी जिस पर मीनारें लगी हुई थीं। उन मीनारों पर पहरेदार खड़े थे जो वहाँ से सारे शहर को देख रहे थे।

उस दरवाजे के अन्दर लकड़ी के दो दरवाजे और थे जिन पर सिपाही खड़े पहरा दे रहे थे।

आधे मुर्गे ने सोचा — "यही राजा का महल होगा।" और यह सोच कर वह कूदता और अपना पंख फड़फड़ाता हुआ उन दरवाजों के पहरेदार सिपाहियों के पास जा पहुँचा।

वह उनसे बोला — "एक तरफ हटो और महल का दरवाजा खोलो। मैं यहाँ राजा से मिलने आया हूँ। वह मुझको बहुत बड़ा ओहदा देगा और बहुत जल्दी ही तुम सब मेरे नीचे काम करने वाले हो।"

यह सुन कर सारे पहरेदार इस जिद्दी आधे मुर्गे पर ज़ोर से हॅस पड़े।

वह आधा मुर्गा महल के दरवाजे के सामने आगे पीछे कूदता और अपना एक पंख फड़फड़ा कर कहता रहा — "राजा मुझसे बहुत जल्दी ही मिलना चाहता है, मुझे अन्दर जाने दो। वह दिन बहुत जल्दी ही आने वाला है जब तुम सब मेरे नीचे होगे और मेरा हुक्म मानोगे।"

तभी किसी ने महल की खिड़की से झॉका और आधे मुर्गे को महल के दरवाजे के सामने कूदते और अपना पंख फड़फड़ाते हुए देखा तो वह ज़ोर से चिल्लाया — "जल्दी। इस आधे मुर्गे को जल्दी महल में आने दो। राजा ऐसे ही मुर्गे की तलाश में है और वह उससे मिलना चाहता है।"

सिपाहियों ने उस आधे मुर्गे के सामने सिर झुकाया और वह आधा मुर्गा ऊपर तक उड़ कर उनके ऊपर चिल्लाया — "मैंने तुमसे कहा था न कि मैं बहुत ही खास हूॅ। तुमने सुना न कि राजा मुझे ढूॅढ रहा है और मुझसे अभी अभी मिलना चाहता है। सो जल्दी से दरवाजा खोलो मैं तुम लोगों के ऊपर राज करने वाला हूॅ।"

सो पहरेदारों ने उसके लिये महल का दरवाजा खोल दिया और वह कूदता और अपना पंख फड़फड़ाता हुआ अन्दर घुस गया।

जैसे ही वह अन्दर घुसा तो उसने एक आदमी को खुली बॉहों और बड़ी सी मुस्कुराहट लिये अपनी तरफ आते देखा।

वह आदमी बोला — "आओ, आओ। तुम्हारा यहॉ स्वागत है। राजा तुमसे अभी अभी मिलना चाहता है।" कह कर उसने उस आधे मुर्गे को अपनी बॉहों में उठा लिया और उसे रसोई की तरफ ले चला।

उसने कहा — "राजा ने आज शाम के खाने में मुर्गे का सूप खाने की इच्छा प्रगट की है और मैं राजा का रसोइया हूॅ।"

कह कर उसने उस मुर्गे को पानी से भरे एक बर्तन में डाल कर आग पर रख दिया ताकि उसको पकाने से पहले उसकी खाल मुलायम हो जाये और वह उसके पंख आसानी से निकाल सके।

पानी ठंडा था उससे उसके पंख उसके शरीर से चिपक गये। आधा मुर्गा चिल्लाया — "ओ पानी, मुझे इस तरह से भिगोना छोड़ो। तुम मुझे बहुत परेशान कर रहे हो। मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो।"

पानी बोला — "मैं जब उस छोटे नाले में बह रहा था और मैंने तुमसे अपनी घास निकालने के लिये कहा था जो मेरे बहाव को रोक रही थी तब तुमने मेरी घास निकालने से मना कर दिया था और तुमने मेरी कोई सहायता नहीं की थी।

और जब मैंने तुमसे कहा कि एक दिन मैं तुम्हारी सहायता करूॅगा तब तुमने कहा था कि तुमको मेरी सहायता की जरूरत नहीं है सो अब तुम अपनी सहायता अपने आप करो।

अब जब तुम्हारे साथ यह सब हो रहा है तो अब तुमको अपने आस पास के लोगों के साथ ख़राब बर्ताव करने की सजा मिल रही है। भुगतो।"

वह पानी का बर्तन आग पर रखा था सो कुछ ही देर में पानी गर्म होने लगा और पानी की गर्मी उस आधे मुर्गे के शरीर को जलाने लगी। वह गर्म पानी के उस बर्तन में इधर से उधर कूदने लगा।

वह फिर चिल्लाया — "ओ आग, मेहरबानी कर के मुझे इतनी तकलीफ मत दो। तुम तो बहुत ही गर्म हो। मेहरबानी कर के मुझे जलाना बन्द करो।"

बर्तन के नीचे से आग बोली — "ओ आधे मुर्गे, क्या तुमको याद नहीं है जब मैं मर रही थी और मैंने तुमको अपनी सहायता के लिये पुकारा था?

तुमने कहा था कि तुम अपनी सहायता अपने आप कर लो। तुमने यह भी कहा था कि तुमको किसी की सहायता की जरूरत नहीं पड़ेगी। मुझे लगता है कि किसी के साथ अच्छा बर्ताव न करने की तुम्हारी यही सजा है।"

तभी रसोइया वहाँ आया और उसने यह देखने के लिये बर्तन का ढक्कन उठाया कि मुर्गा उसके पंख निकालने और राजा का खाना बनाने के लायक हो गया कि नहीं।

देख कर वह बोला — "ओह, इस मुर्गे से तो बिल्कुल काम नहीं चलेगा।"

क्योंकि वह आधा मुर्गा तो जल गया था और छेद वाले पत्थर[4] जैसा हो गया था। वह तो पूरा का पूरा ही काला हो गया था। उसने उसको उठा कर महल की खिड़की से बाहर फेंक दिया।

हालॉकि वह आधा मुर्गा छेदों वाले पत्थर जैसा हो चुका था पर फिर भी वह इस लायक था जो वह हवा को पुकार सकता सो उसने हवा को पुकारा — "ओ हवा, मेहरबानी कर के मुझे जमीन पर गिरने और मरने से पहले ही पकड़ लो।"

हवा ने आधे मुर्गे की पुकार सुनी और उसको उठा लिया और महल की ऊॅची दीवार पर ले गयी और बोली — "तुमने मेरी सहायता करने से मना कर दिया था जब मैं पेड़ की शाखाओं में फॅस गयी थी।

तुमने मुझसे कहा था कि मैं अपनी सहायता अपने आप कर लूॅ। और साथ में तुमने मुझसे यह भी कहा था कि तुमको किसी की सहायता की जरूरत नहीं है।

सो ऐसा लगता है कि तुम्हारी कहानी अब बदल गयी है। मुझे तुम्हारी सहायता नहीं करनी चाहिये थी पर तुम्हारी मॉ, भाई और बहिन दुखी होते अगर मैं तुमको इतनी ऊपर से गिर जाने देती तो।"

[4] Translated for the words "Pumice stone" – it has many small holes and is very low in density that is why it can float on water.

हवा फिर उस आधे मुर्गे को शहर के सबसे ऊँचे चर्च पर ले गयी और वहाँ उस चर्च के कास के ऊपर[5] बिठा कर बोली — "तुमने एक बार कहा था कि तुम सबको नीचे देखोगे और तुम सबके ऊपर होगे। सो आज तुम्हारी वह इच्छा पूरी हुई। दूसरे लोग तुमको हमेशा ऊपर की तरफ देखेंगे और मुस्कुरायेंगे कि अब तुम किसी को कोई दुख नहीं पहुँचा सकते।" कह कर हवा उसको उस कास के ऊपर बिठा कर चली गयी।

तुम लोग जब कभी मैड्रिड जाओगे तो वहाँ उस आधे मुर्गे को उस कास के ऊपर एक टाँग से बैठा पाओगे। अपनी एक आँख से वह सबको नीचे देखता रहता है।

वह अभी भी अपने आपको बहुत ऊँचा समझता है पर हवा उसकी शान को अपने काबू में रखती है। वह जब चाहे उसको अपने ज़ोर से किधर भी घुमा देती है। आज हम उस आधे मुर्गे को हवा की दिशा बताने वाला कहते हैं।

[5] Translated for the word "Steeple". See its picture above.

2 आधा मुर्गा–1[6]

आधे मुर्गे की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये उत्तरी अमेरिका के पुअर्टो रिको की लोक कथाओं से ली है। यह भी स्पेन वाली कहानी जैसी ही है।

एक बार की बात है कि एक सुन्दर मुर्गी ने कई चूज़ों को जन्म दिया पर उनमें से एक चूज़ा बाकी सब चूज़ों से बहुत अलग था। उसकी केवल एक ही ऑख थी, एक ही टॉग थी और एक ही पंख था[7]।

पर मॉ मुर्गी अपने उस आधे मुर्गे को अपने दूसरे बच्चों से ज़्यादा प्यार करती थी क्योंकि वह उसके लिये बहुत दुखी थी। उधर क्योंकि दूसरे लोग उस पर ज़्यादा ध्यान देते थे इसलिये वह भी हर एक से चिढ़ कर बहुत जल्दी गुस्सा हो जाता था।

---

[6] Half a Chick – a folktale from Puerto Rico, America, North America. Adapted from the Web Site : http://www.yale.edu/ynhti/curriculum/units/1993/2/93.02.12.x.html#c
Adopted, retold and written by Doris M Vazquez

[7] J. Alden Mason and Aurelio M Espinosa found three versions of the "El Medio Pollito" story that were being told in Puerto Rico in the beginning of this century. These versions were European and probably were brought to the island from Castile. RS Boggs in his article "The Halfchick Tale in Spain and France" summarizes the story as it was basically being told in Puerto Rico, but also found a literary version that was being used in schools in the United States. The story is retold in "The Green Fairy Book" by Andrew Lang from Fernan Caballero. The version that I have translated seems to be closer to this version than to the original Castilian story. Apparently this version was introduced in Puerto Rico after the island became a possession of the United States in 1898.

वह अपने भाई बहिनों के साथ भी ठीक से बर्ताव नहीं करता था। अगर दूसरे लोग उसके साथ हॅसी करते या खेलते तो वह यह समझता कि वे उसकी हॅसी उड़ा रहे हैं।

और अगर सुन्दर चूज़े उसको गुस्से और नफरत से देखते तो उसको लगता कि उनको कोई ठीक से समझा नहीं रहा।

एक दिन तंग आ कर वह अपनी मॉ से बोला कि वह मुर्गीखाना उसके लिये बहुत छोटा था और उस जैसे चूज़े के लिये ठीक भी नहीं था सो वह किसी बड़े शहर जा रहा था ताकि वहॉ वह खास बड़े बड़े लोगों के साथ रह सके।

यह सुन कर मॉ मुर्गी तो कॉप गयी क्योंकि वह जानती थी कि बाहर तो हर कोई उसका मजाक बनायेगा और वह वहॉ पर बहुत दुखी होगा।

सो वह उससे बोली — "यह बेवकूफी का विचार तुम्हारे दिमाग में कहॉ से आया बेटा? तुम्हारे पिता ने तो इस बारे में कभी सोचा ही नहीं। और न यह मुर्गीखाना ही कभी छोड़ा और हम लोग तो यहॉ बहुत खुश हैं। तुम ऐसी कौन सी जगह जा रहे हो जहॉ तुमको यहॉ से ज़्यादा प्यार मिलेगा?"

आधा मुर्गा बोला — "मैं वहॉ जाऊॅगा जहॉ राजा और रानी रहते हैं। मैं उनसे मिलूॅगा। यहॉ पर तो हर एक मुझसे बहुत नीचा और बेवकूफ है।"

मॉ मुर्गी उसकी बातें आगे नहीं सुन सकी और बोली — "बेटे, क्या तुमने कभी अपनी शक्ल तालाब में देखी है? तुम्हारे केवल एक पंख है, एक टॉग है और एक ऑख है। यह तुम्हारे लिये बड़े अपमान की बात है क्योंकि तुम्हारे पिता तो बहुत सुन्दर थे।"

आधा मुर्गा बोला — "मेरे पिता की सुन्दरता की बात मत करो। यह तुम्हारी गलती है जो मैं इस तरह का दिखायी देता हूॅ। वह तुम्हारा अंडा था.... ।"

मॉ मुर्गी ने दुखी हो कर अपना सिर इतना झुका लिया जब तक कि उसकी चोंच जमीन से नहीं छू गयी। वह अपने आपको बहुत मजबूर महसूस कर रही थी कि वह अपने उस बेटे को उसका दूसरा आधा हिस्सा नहीं दे पा रही थी।

वह धीरे से बोली — "बेटे मुझे माफ कर दो हालॉकि यह मेरी गलती नहीं है। तुम्हारा वाला अंडा मेरा आखिरी अंडा था जो मैंने दिया। हो सकता है यही इसकी वजह हो.... ।"

आधे मुर्गे ने उसे बीच में टोका — "मैं किसी बड़े शहर में जाऊॅगा और वहॉ जा कर कोई डाक्टर ढूॅढूॅगा जो मेरा औपेरेशन कर के मेरे शरीर के वे हिस्से लगा दे जो मेरे शरीर में नहीं हैं। जितनी जल्दी होगा उतनी जल्दी मैं यहॉ से चला जाऊॅगा।"

मॉ मुर्गी ने देखा कि उस आधे मुर्गे से इस बारे में कोई बात करना बेकार था सो उसने उसको कुछ सलाह देने का विचार किया।

वह बोली — "मेरे प्यारे बेटे, जो मैं कहती हूँ उसको ध्यान देकर सुनो। पहली बात – कभी भी किसी चर्च के सामने से मत गुजरना। सेन्ट पीटर[8] और वहाँ के दूसरे सेन्ट मुर्गों को पसन्द नहीं करते।

दूसरी बात – "रसोइयों से दूर रहना। वे तुम्हारे सबसे बड़े दुश्मन हैं। वे मुर्गों की गर्दन मरोड़ने में बहुत होशियार होते हैं।"

फिर उसने उसको अपना आशीर्वाद दिया और सेन्ट राफेल[9] से प्रार्थना की कि वह उसकी रक्षा करे। आखिर में उसने उससे कहा कि जाने से पहले वह अपने पिता का आशीर्वाद भी ले ले हालाँकि उन दोनों में बिल्कुल भी नहीं पटती थी।

आधा मुर्गा अपने पिता से मिलने गया, उसके पैर चूमे और उसका आशीर्वाद माँगा। उसका पिता भी उसकी हालत पर बहुत तरस खाता था इसलिये उसे बहुत प्यार करता था। इस विदाई के समय में उसने उसके साथ बहुत ही कोमलता से बर्ताव किया।

माँ मुर्गी छिप कर बहुत रोयी। वह नहीं चाहती थी कि उसका बेटा उसको रोते हुए देखे। आधे मुर्गे ने अपना एक पंख फड़फड़ाया, तीन बार बाँग लगायी और दुनियाँ जीतने के लिये मुर्गीखाने से बाहर कूद गया।

[8] Saint Peter – Christians' one of the very famous saints' name

[9] Saint Raphael – Christians' one of the very famous saints' name

कुछ दूर सड़क पर चलने के बाद वह एक नदी के पास आ पहुँचा जो करीब करीब पूरी सूखी हुई थी। केवल बीच में बहुत थोड़ा सा पानी बह रहा था।

वह थोड़ा सा बहता हुआ पानी उस आधे मुर्गे से बोला — "दोस्त, मैं इतनी कमजोरी महसूस कर रहा हूँ कि मेरे सामने जो शाखें पड़ी हैं मैं उनको अपने रास्ते से नहीं हटा सकता और मैं उनका चक्कर काट कर जाने के लिये बहुत थका हुआ हूँ। क्या तुम उनको मेरे रास्ते से हटा सकते हो□

तुम इस काम के लिये अपनी चोंच का इस्तेमाल कर सकते हो। मैं तुमसे इस सहायता की भीख माँगता हूँ।"

उस पानी की पतली सी धार की तरफ देख कर आधे मुर्गे ने उसमें कोई रुचि न दिखाते हुए बोला — "मैं तुम्हारे रास्ते से वे शाखाऐं हटा सकता हूँ पर मैं हटाना नहीं चाहता। तुम तो बहुत ही बेकार की बहुत छोटी सी नदी हो।" और यह कह कर वह अपने रास्ते चला गया।

पानी की वह पतली सी धार चिल्लायी — "ओ बेवकूफ, देखना एक दिन तुमको मेरी सहायता की जरूरत पड़ेगी।"

थोड़ी दूर आगे चलने के बाद उस आधे मुर्गे को बहुत धीरे चलती हुई हवा मिली।

वह कमजोर हवा उस आधे मुर्गे से बोली — "ओ भले आधे मुर्गे, मैं यहाँ लेटी हुई हूँ उठ नहीं सकती। मैं जो बहुत ताकतवर हूँ

उठ कर पानी में लहरें उठाना चाहती हूँ, पेड़ों की शाखाओं में उलझना चाहती हूँ।

क्या तुम मुझको अपनी चोंच से उठा सकते हो? अगर तुम मुझको अपने पंख से थोड़ा सा उठा देते तो मैं बह जाती। यहाँ की गर्मी मुझे मारे डाले रही है।"

आधा मुर्गा गुस्से से चिल्लाया — "ओ गूँगी हवा, तुमको वही मिल रहा है जो तुमको मिलना चाहिये। तुम वहीं रहो जहाँ तुम हो। तुमने मुझे पहले से ही बहुत तंग किया है।

तुमने मेरे पंख पहले ही अलग अलग कर रखे हैं। क्योंकि मेरी एक ही टाँग है इसलिये तुमने मुझको दीवार की तरफ धकेल दिया है। मैं तुम्हारी वजह से पहले से ही बहुत घायल हो चुका हूँ, ओ बुरी नीच हवा।" और अपने रास्ते चल दिया।

हवा जो अपने आप जमीन से नहीं उठ सकती थी चिल्लायी — "हर मुर्गा पकता है तुम भी पकोगे। तुम बहुत ही बेवकूफ हो।"

वह छोटा आधा मुर्गा वहाँ से थोड़ी दूर चलने के बाद एक ऐसे मैदान के पास आया जहाँ आग लगी हुई थी। वहाँ से धुँआ बहुत ऊँचा उठ रहा था और सब जगह आग ही आग दिखायी देरही थी।

वह आग की लपटों के थोड़ा पास आया तो उसको एक बहुत ही बारीक सी आवाज सुनायी पड़ी — "ओ आधे मुर्गे, दोस्त, मैं एक बहुत ही छोटी सी चिनगारी हूँ जो बुझना नहीं चाहती। मैं पहाड़ के ऊपर जाना चाहती हूँ।

अगर मैं बुझ गयी तो मैं कभी भी ऊपर से आसमान नहीं देख पाऊँगी। सो मेरे ऊपर थोड़ी सी सूखी घास डाल दो ताकि मैं फिर से लपटों में बदल जाऊँ। मेरे ऊपर दया करो ओ आधे मुर्गे।"

आधा मुर्गा बोला — "मैं कोई खेत पर काम करने वाला आदमी नहीं हूँ जो तुम्हारे लिये घास उठा कर लाऊँ। भाग जाओ यहाँ से।"

आग ने अपनी आखिरी ताकत इकट्ठी की और चिल्लायी — "मैं तुझे याद रखूँगी ओ आधे मुर्गे। देख लेना किसी दिन तुझे मेरी जरूरत पड़ेगी।"

आधे मुर्गे को इतना गुस्सा आया कि उसने उस चिनगारी पर अपना अकेला पैर पटका और उसको राख में बदल कर अपने रास्ते चल दिया।

जब वह बड़े शहर में आया तो पहला काम तो उसने यही किया कि उसने अपनी माँ का कहना नहीं माना। वह सीधा चर्च के दरवाजे पर गया और ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा ताकि सेन्ट पीटर गुस्सा हो जायें।

फिर वह महल की तरफ चला। उस महल के सामने जिसमें राजा और रानी रहते थे उनके पहरेदारों ने उसको रोकने की कोशिश की।

ज़िन्दगी में पहली बार आधा मुर्गा डरा। उन पहरेदारों के हाथों में बन्दूकें थीं। बजाय रुकने के वह घूम गया और बराबर के दरवाजे से घुस गया।

एक बार वह महल के अन्दर पहुँच गया तो फिर तो वह आधा मुर्गा इधर उधर कूदने लगा और कूदते कूदते एक बड़े से रसोईघर में पहुँच गया जहाँ आदमियों ने ऊँचे ऊँचे टोप पहन रखे थे।

उसने सोचा कि वे राजा और रानी थे। वह सीधा उनके पास चला गया।

उनमें से एक रसोइये ने उसको पकड़ लिया और उसकी गर्दन ऐंठ दी। फिर उस रसोइये ने अपने असिस्टैन्ट को बुलाया और कहा — "मुझे थोड़ा सा गर्म पानी दो ताकि मैं इसके पंख साफ कर सकूँ।"

रसोइये ने असिस्टैन्ट ने रसोइये को गर्म पानी दिया और रसोइये ने उस आधे मुर्गे को उस गर्म पानी में डाल दिया। आधा मुर्गा चिल्लाया — "ओ पानी, मेरे ऊपर दया करो मुझे इतनी ज़ोर से मत जलाओ।"

पानी ने पूछा — "क्या तुमने मेरे ऊपर दया की थी जब मैंने तुमसे अपने रास्ते में से शाखाएँ हटाने के लिये कहा था? तुमको मेरी याद है न?"

थोड़ी ही देर में रसोइये ने उसके पंख साफ किये और उसको ओवन में रखा तो आधा मुर्गा उस आग से बोला — "ओ आग,

मेरी अच्छी दोस्त, तुम तो बहुत ताकतवर हो और हर चीज़ को नष्ट करने वाली हो, मेहरबानी कर के मेरे ऊपर दया करो, मुझे मत जलाओ।"

आग बोली — "ओ बेवकूफ अब तुम ठीक बात पर आये हो। तुमको मेरी याद नहीं है क्या? मैं वह छोटी सी चिनगारी थी जिसने तुमसे सहायता माँगी थी कि मुझे मरने से बचा लो और तुम मेरे ऊपर अपना पंजा पटक कर चले गये थे।" और आग ने उसको भून भून कर काला कर दिया।

रसोइये ने जब उस आधे मुर्गे को जला हुआ देखा तो उसने उसको गालियाँ दीं और उसको खिड़की से बाहर फेंक दिया। हवा ने उसे पकड़ लिया और उसको उड़ा कर ले चली।

आधा मुर्गा रो कर बोला — "ओ प्यारी हवा, मैं जमीन पर मरना चाहता हूँ। तुम मुझे कहीं पर भी गिरा दो, पेड़ के नीचे, पर मुझको बहुत ऊपर मत ले जाना और वहाँ से गिराना भी नहीं। मैं पहले ही बहुत सह चुका हूँ।"

हवा गुस्सा हो कर बोली — "यह तुम क्या कह रहे हो?" और वह हवा उसको हवा में घुमाते हुए ले चली।

वह फिर बोली — "तुम्हारी तो याद खराब है। क्या तुमको याद नहीं कि जब मैंने तुमसे कहा था कि तुम मुझको जमीन से ज़रा

सा ऊपर उठा दो तब क्या तुमने मेरी सहायता की थी? नहीं की थी न? बल्कि उलटे तुमने मेरा अपमान किया था।"

उसके बाद हवा ने और ऊपर और ऊपर आसमान की तरफ उड़ना शुरू किया। पहले घरों के ऊपर फिर बिल्डिंगों के ऊपर और फिर चर्च के ऊपर।

जैसे ही वह चर्च के ऊपर पहुँचा वहाँ से उस आधे मुर्गे को सेन्ट पीटर ने पकड़ लिया और उसको चर्च पर लगे डंडे पर बिठा दिया और उसको एक मौसम बताने वाले मुर्गे में बदल दिया।

और अब वह आधा मुर्गा अपनी नीचता के लिये और अपने आपको बचाने के लिये हवा, धूप और बारिश के सहारे पर जीता है और चारों तरफ घूमता रहता है, घूमता रहता है, घूमता रहता है।

3 आधा मुर्गा–2[10]

आधे मुर्गे की एक और मज़ेदार लोक कथा। यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के अल्बेनिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है। सो लो पढ़ो आधे मुर्गे की यह तीसरी लोक कथा।

बुढ़िया चिल्लायी — "ओ आलसी बुड्ढे, अगर तुम इतने आलसी नहीं होते तो शायद हम लोग किसी अच्छे घर में रह रहे होते और हमारे पास बहुत सारा खाना होता। मैं गरीब होने से तो तंग हूँ ही और साथ में तुमसे भी।"

उधर वह बूढ़ा भी अपने आपको आलसी सुनते सुनते तंग आ गया था। असल में तो वह अपने आपको केवल आलसी सुनते सुनते ही नहीं बल्कि अपनी पत्नी की आवाज से ही तंग आ गया था।

सो वह अपनी पत्नी से बोला — "अगर तुम मुझसे इतनी ही तंग हो तो हमारे पास जो कुछ भी है उसका आधा आधा बॉट लो और यहॉ से खिसको।"

बुढ़िया चिल्ला कर बोली — "वाह, यह तो बहुत ही अच्छा विचार है। यह तो आज तुमने सालों में पहली बार कोई काम की बात की है।"

---

[10] Half Rooster - a folktale from Albania, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.themuralman.com/albania/albania_folktale.htm
Collected and retold by Phillip Martin

उन बूढ़े और बुढ़िया के लिये घर की चीज़ों को आधा आधा बॉटना कोई मुश्किल काम नहीं था। उनके पास एक बिल्ला था और एक मुर्गा था। बुढ़िया ने बिल्ला उठाया और दरवाजे में से तूफान की तरह से बाहर निकल गयी।

उसने सोचा — "कम से कम यह बिल्ला मेरे लिये चिड़ियें तो पकड़ेगा और मैं कुछ पका पाऊँगी। यह मुर्गा तो न कुछ पकड़ सकता है और न ही अंडे दे सकता है।"

इस मामले में वह बुढ़िया ठीक सोचती थी। बुढ़िया के जाने के बाद तो अब उसके पति के पास तो खाने के लिये कुछ भी नहीं बचा था।

एक दिन पति इतना ज़्यादा भूखा था कि उसको अपने मुर्गे से कहना पड़ा — "मेरे दोस्त, मुझे बहुत अफसोस है पर मेरे पास अब और कोई चारा नहीं है और मुझे आज तुमको खाना पड़ रहा है।"

मुर्गा बोला कि वह समझ गया। पर बूढ़े की बात उसको बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगी पर वह क्या करता। उसका मालिक तो वह बूढ़ा ही था न। सो बूढ़े ने अपनी कुल्हाड़ी से मुर्गे को बीच में से काट दिया।

अब उसने आधा मुर्गा तो पका कर खा लिया और दूसरा आधा अपने पालतू की तरह से रखा रहने दिया। उस दिन से लोग उसको आधा मुर्गा पुकारने लगे।

उस आधे मुर्गे के लिये एक टॉग पर इधर से उधर कूदते रहना कोई मुश्किल काम नहीं था। पर वह इतना जरूर जान गया था कि अगर वह इस भूखे बूढ़े के साथ रहा था तो एक दिन वह फिर भूखा हो जायेगा और उस बचे हुए आधे मुर्गे को भी खा जायेगा।

सो उसने सोचा कि अब उसको दुनियॉ में कहीं बाहर जा कर अपनी किस्मत आजमानी चाहिये। उसने यह भी सोचा जब मैं काफी सोना कमा लूँगा तब मैं अपने घर फिर वापस आ जाऊँगा।

सो यही सोच कर वह घर से बाहर निकल गया और कूद कूद कर एक तालाब के किनारे पहुँच गया। वहॉ उसने देखा कि उसका दोस्त मेंढक लिली के एक पत्ते पर बैठा हुआ है

वह उससे चिल्ला कर बोला — "मैं अपनी किस्मत आजमाने निकला हूँ। मुझे मशहूर होना है। और तुम क्योंकि मेरे दोस्त हो तो तुम भी वैसा ही क्यों नहीं करते हो?"

मेंढक को दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी वह बोला — "चलो चलो यह तो बड़ा अच्छा है। दोनों मिल कर दुनियॉ देखते हैं। दोनों थोड़ा आनन्द लेते हैं। दो दोस्तों का साथ साथ यात्रा करना एक आदमी के अकेले यात्रा करने से ज़्यादा अच्छा है।"

यह कह कर मेंढक अपने लिली के पत्ते से कूद कर पानी में तैरता हुआ किनारे पर आ गया। वह मुर्गे के पंख के नीचे और उसके पेट के ऊपर आराम से बैठ गया।

आधे मुर्गे ने अपनी यात्रा जारी रखी। कूदते कूदते मुर्गे को एक लोमड़ा मिला। हालॉकि लोमड़ा काफी ऊपर एक चट्टान पर बैठा हुआ था फिर भी उसने मुर्गे के पंख में से बाहर निकलती एक हरे रंग की टॉग देख ली।

लोमड़ा बोला — "क्या यह मेंढक है जो तुम्हारे पंख के नीचे छिपा बैठा है? तुम लोग क्या करने जा रहे हो?"

आधे मुर्गे ने चट्टान के ऊपर बैठे लोमड़े को देखा और कुकड़ूँ कू की आवाज लगायी — "मैं अपनी किस्मत बनाने चला हूँ लोमड़े भाई। मैं दुनियॉ में मशहूर होने चला हूँ। तुम मेरे दोस्त हो तुम भी वैसा ही क्यों नहीं करते, आओ न?"

उस आधे मुर्गे को लोमड़े को भी दोबारा पूछने की जरूरत नहीं पड़ी। लोमड़ा बोला — "चलो हम सब दुनियॉ देखते हैं। थोड़ा आनन्द लेते हैं। तीन दोस्तों का साथ साथ यात्रा करना एक आदमी के अकेले यात्रा करने से ज़्यादा अच्छा है।"

सो लोमड़ा भी अपनी चट्टान से कूद कर एक आराम वाली जगह में बैठ गया – मुर्गे के पंख के नीचे और उसके पेट के ऊपर।

आधे मुर्गे ने फिर अपनी यात्रा शुरू कर दी। चलते चलते वह एक गुफा के पास आ गया। वहॉ उसने देखा कि पीली ऑखों की एक जोड़ी उसको घूर रही है।

वे ऑखें किसी को भी डरा सकती थी पर आधे मुर्गे को नहीं। वे ऑखें उसके दोस्त भेड़िये की थीं। उस गहरी गुफा में अपने घर

से भेड़िये ने देखा कि आधे मुर्गे के पंखों में से हरे और लाल रंग का मॉस झॉक रहा है।

यह देख कर भेड़िया मुस्कुरा दिया और मुर्गे से पूछा — "अरे ओ आधे मुर्गे, तुम ये लोमड़े और मेंढक को अपने पंखों में छिपाये क्या कर रहे हो?"

आधे मुर्गे ने गुफा के अँधेरे में झॉका और बोला — "कुकडूँ कू ओ भेड़िये भाई, मैं अपनी किस्मत बनाने चला हूँ। मैं दुनियॉ में मशहूर होने चला हूँ। तुम मेरे दोस्त हो तुम भी वैसा ही क्यों नहीं करते?"

भेड़िये को भी दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी। वह भी अपनी गुफा से बाहर निकल आया और बोला — "चलो हम सब दुनियॉ देखते हैं। थोड़ा आनन्द लेते हैं। चार दोस्तों का साथ साथ यात्रा करना एक आदमी के अकेले यात्रा करने से ज़्यादा अच्छा है।"

उसकी पीली ऑखें दिन के उजाले में भी इतनी भयानक दिखायी नहीं दे रही थीं जितनी कि उस गुफा के अँधेरे में। सो भेड़िया भी अपनी गुफा से निकल कर एक आराम वाली जगह में बैठ गया – आधे मुर्गे के पंख के नीचे और उसके पेट के ऊपर।

आधा मुर्गा फिर कूदता हुआ अपने अमीर बनने और मशहूर होने की यात्रा पर आगे चला। अब वह एक जानवर रखने के बाड़े के पास आ गया।

वहॉ उसने एक गुलाबी नाक भूसे में से बाहर निकली हुई देखी। वह पहचान गया कि वह नाक उसके प्यारे दोस्त चूहे की है।

चूहा उस भूसे के ढेर में से बाहर निकल कर आया और आधे मुर्गे के फूले हुए पंखों की तरफ घूरा और बोला — "अगर मैं गलत नहीं हूॅ तो तुम्हारे पंखों के नीचे मेंढक, लोमड़ा और भेड़िया हैं। तुम सब यहॉ क्या कर रहे हो भाई लोगों?"

आधे मुर्गे ने भूसे से निकले हुए अपने दोस्त चूहे की तरफ देखा और बोला — "कुॅकडू कू प्यारे चूहे, मैं अपनी किस्मत बनाने चला हूॅ। मैं दुनियॉ में मशहूर होने चला हूॅ। तुम मेरे दोस्त हो तुम भी वैसा ही क्यों नहीं करते?"

चूहे को भी दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी। उसने अपने बाड़े में भूसा छोड़ा और बोला — "चलो हम सब दुनियॉ देखते हैं। थोड़ा आनन्द लेते हैं। पॉच दोस्तों का साथ साथ यात्रा करना एक आदमी के अकेले यात्रा करने से ज़्यादा अच्छा है।"

वह भी आराम से एक जगह में बैठ गया – आधे मुर्गे के पंख के नीचे और उसके पेट के ऊपर। पर अब वहॉ उस पंख के नीचे किसी और दोस्त के लिये कोई जगह नहीं थी।

आधा मुर्गा फिर कूदता हुआ अपने अमीर बनने और मशहूर होने की यात्रा पर आगे चला।

एक दिन दोस्तों की यह मंडली एक सब्जी के बागीचे से गुजरी। सब सब्जियॉ तोड़ने लायक थीं और आधे मुर्गे को भूख लगी थी। वह चिल्लाया – "कुकडूँ कू। देखो कितना सारा खाना और यह सब केवल मेरे लिये है।"

पर उस बगीचे का मालिक तो वैसा नहीं सोचता था और उस बगीचे का मालिक था वहॉ का राजा। राजा ने अपने नौकरों को उस मुर्गे को पकड़ने का हुक्म दे दिया। उसने अपने नौकरों से कहा कि वह आधा मुर्गा जरूर है पर देखने में बड़ा स्वादिष्ट लगता है।

नौकर उस मुर्गे को पकड़ने दौड़े और वह मुर्गा उनसे बचने के लिये भागा। इस भाग दौड़ में राजा के बहुत सारे बढ़िया टमाटर कुचल गये।

नौकरों के भारी जूतों के नीचे आ कर राजा की स्ट्रौबैरी[11] की क्यारियॉ की क्यारियॉ बर्बाद हो गयीं। जब बन्द गोभी का आखिरी पौधा कट गया तभी कहीं जा कर वह मुर्गा पकड़ा जा सका।

राजा ने चिल्ला कर कहा — "इस मुर्गे को सूप बनाने वाले बर्तन में डाल दो। और उसमें कुछ टमाटर और एक बन्द गोभी डालना मत भूलना।"

[11] Strawberry – berry is a kind of wild fruit, normally without seed. There are several types of berries – strawberries, blue berries, black berries, cranberries etc. See its picture above.

आधे मुर्गे को पता चल गया कि वह तो बड़ी भारी मुसीबत में फॅस गया है। नीचे आग की लपटें उठ रही थीं और बर्तन का पानी बहुत ज़ोर से गर्म होता जा रहा था।

आधे मुर्गे ने मेंढक की तरफ देखा और चिल्लाया — "कुकडूॅ कू। अगर कभी मुझे दोस्त की जरूरत थी तो वह अब है। मेंढक, मेरे दोस्त, क्या तुम मेरी कुछ सहायता कर सकते हो?"

मेंढक को मालूम था कि उसे क्या करना है। उसने उस बर्तन का सारा पानी पी लिया और बाकी जो कुछ उसमें बचा उसे उसने बर्तन उलटा कर के आग के ऊपर डाल दिया जिससे वह आग पूरी तरीके से बुझ गयी।

गीला सा मुर्गा उस बर्तन में से बाहर निकल आया और कूद कर बाहर भाग गया।

पर वह राजा को नौकरों से बच नहीं सका। वे उसके लिये बहुत तेज़ थे। उन्होंने तुरन्त ही उस मुर्गे को फिर से पकड़ लिया और अबकी बार उसे मुर्गे के बाड़े में फेंक दिया।

यहॉ भी आधा मुर्गा मुसीबत में था। यहॉ की मुर्गियॉ बहुत अच्छे स्वभाव की नहीं थीं। वे कभी भी उसको चोंच मार सकती थीं। और अगर एक बार उन्होंने उसको चोंच मारना शुरू कर दिया तो बस फिर तो वे उसको मार कर ही छोड़तीं।

सो मुर्गे ने लोमड़े की तरफ देखा और बोला — "कुकड़ूँ कू। अगर कभी मुझे दोस्त की जरूरत थी तो वह अब है। ओ लोमड़े, मेरे दोस्त, क्या तुम मेरी कुछ सहायता कर सकते हो?"

लोमड़े को मालूम था कि उसे क्या करना है। उसने अपने होठ चाटे और उन मुर्गियों की तरफ देख कर मुस्कुराया। पर वे मुर्गियाँ भी बेवकूफ नहीं थीं। उनको मालूम था कि लोमड़े को मुर्गियाँ खाना कितना पसन्द था।

इससे पहले कि लोमड़े की मुर्गियों की दावत हो मुर्गियों ने बाड़े की चहारदीवारी में एक बड़ा सा छेद बना लिया जिसमें से वे सब निकल कर भाग गयीं और साथ में आधा मुर्गा भी।

पर एक बार राजा के नौकरों ने आधे मुर्गे को फिर से पकड़ लिया। इस बार उन्होंने उसे राजा के घोड़ों के अस्तबल में फेंक दिया। उन्होंने सोचा कि ये घोड़े इसको अच्छा सबक सिखायेंगे।

एक बार फिर मुर्गे को पता चल गया कि वह बहुत बड़ी मुसीबत में फँस गया है। घोड़ों के खुर उसके पास आते जा रहे थे। किसी भी समय वे उसको कुचल कर मार सकते थे।

इस बार उसने भेड़िये की तरफ देखा और बोला — "कुकड़ूँ कू। अगर कभी मुझे दोस्त की जरूरत थी तो वह अब है। भेड़िये, मेरे दोस्त, क्या तुम मेरी कुछ सहायता कर सकते हो?"

भेड़िये को मालूम था कि उसको क्या करना है। वह तो उसकी सहायता करने के लिये बड़ी खुशी से तैयार था। उसका तो मजा

आ गया था। वह तुरन्त अस्तबल में घुसा और घोड़ों के ऊपर टूट पड़ा।

पर कोई भी घोड़ा भेड़िये का शिकार नहीं होना चाहता था सो उन्होंने अपने अस्तबल के चारों तरफ लगी बाड़ तोड़ी और निकल कर भाग गये। और उनके साथ साथ भाग गया आधा मुर्गा भी।

पर राजा के नौकर भी उसको छोड़ नहीं रहे थे। एक बार फिर उन्होंने उस मुर्गे को पकड़ लिया पर इस बार वे नहीं सोच पाये कि वह इस मुर्गे का क्या करें।

सो राजा ने उनको सलाह दी कि वे उसको उस बक्से में बन्द कर दें जिसमें सोना रखा था। वह बोला — "ज़रा ध्यान रखना कि वह बक्सा सबसे ज़्यादा मजबूत हो।" सो उसके नौकरों ने यही किया।

मुर्गा एक बार फिर से बड़ी भारी मुसीबत में फॅस गया था। अगर वह इस बक्से में से समय से बाहर नहीं निकला तो वहॉ तो वह भूखा ही मर जायेगा। और वह जानता था कि राजा उसको उस बक्से में बहुत देर तक रखने वाला था।

सो उसने चूहे की तरफ देखा और बोला — "कुकड़ूँ कू। अगर कभी मुझे दोस्त की जरूरत थी तो वह अब है। ओ चूहे, मेरे दोस्त, क्या तुम मेरी कुछ सहायता कर सकते हो?"

और चूहे को भी पता था कि उसको क्या करना था। वह बोला — "मुझे इस बक्से में इधर उधर घूमने के लिये थोड़ी सी जगह चाहिये। क्या तुम थोड़ा सा सोना निगल सकते हो?"

आधा मुर्गा जानता था कि वह यह काम कर सकता था। वह चूहे की सहायता करना चाहता था। सो उसने उस बक्से का करीब करीब सारा सोना निगल लिया।

अब चूहे ने लकड़ी के बक्से को काटना शुरू कर दिया और कुछ ही देर में उसने उस बक्से में इतना बड़ा छेद कर दिया जिसमें से वे दोनों भाग सकते थे।

इस समय वहॉ पर कोई नौकर नहीं था। क्योंकि किसी को यह उम्मीद नहीं थी कि मुर्गा उस बक्से में से निकल जायेगा सो किसी ने उसकी पहरेदारी करने की भी कोशिश नहीं की।

आधे मुर्गे ने ज़रा सा भी समय बर्बाद नहीं किया। उसने सोने के बचे हुए टुकड़े इकट्ठे किये और कूद कर उस बक्से में से निकल कर भाग गया।

इस भागने में उसका कुछ सोना रास्ते में गिर गया पर उसकी चिन्ता करने का उसके पास समय नहीं था। उसको तो बस राजा से बचना था और अपने घर पहुॅचना था।

जब वह घर पहुॅच गया तो उसको मालूम था कि उसके अब घूमने के दिन गये। वह अपने मालिक की तरफ दौड़ा और उससे

लिपटने के लिये अपने पंख फैला दिये। वह बूढ़ा अपने पुराने दोस्त को वापस आया देख कर बहुत खुश हुआ।

वह यह देख कर और भी खुश हुआ जब उसने सोने के कुछ टुकड़े आधे मुर्गे के पंखों के नीचे देखे।

"ये तुमको कहाँ से मिले?" उसने पूछा।

आधा मुर्गा मुस्कुरा कर बोला — "यह एक लम्बी कहानी है।"

बूढ़ा बोला — "चलो, ये हमारे कुछ दिन के खाने के लिये काफी हैं। मैं अभी बाजार जाता हूँ और हमारे लिये खाना खरीद कर लाता हूँ।"

मुर्गा बोला — "जब तक तुम यह सब करते हो तब तक तुम मुझे कुछ भूसा दे दो ताकि मैं उस पर आराम से सो सकूँ। मैं बहुत थक गया हूँ।"

"जो तुम चाहो, ओ आधे मुर्गे।"

जब उस बूढ़े ने सारा सोना खर्च कर दिया तो आधे मुर्गे ने उससे कहा कि वह चिन्ता न करे। अगर वह उसको झाड़ू से मारेगा, बहुत जोर से मारने की जरूरत नहीं है केवल धीरे से ही मारने की जरूरत थी तो वह सोने का एक टुकड़ा उगल देगा जो उन लोगों के कई दिन के खाने के लिये काफी होगा।

और फिर यही हुआ। जब भी उनकी रसोई की आलमारियाँ खाली होतीं तो वह बूढ़ा अपनी झाड़ू उठाता, मुर्गे को मारता और कुछ सोना निकाल लेता।

अब आधे मुर्गे के पास भी खाने के लिये खूब सारा खाना था और सोने के लिये आरामदेह बिस्तर। अब बूढ़े की ज़िन्दगी भी बहुत अच्छी हो गयी थी।

वे अपने घर में खुश थे और अक्सर अपने दोस्तों को शाम को खाने पर बुलाते थे जिनमें मेंढक, लोमड़ा, भेड़िया और चूहा भी शामिल थे।

पर कहानी के आखीर में सारे लोग खुश नहीं थे। बुढ़िया इस सबसे बहुत गुस्सा थी। वह केवल गुस्सा ही नहीं थी वह बूढ़े से जल भी रही थी। वह रो रही थी — "मैंने बिल्ले को क्यों लिया, मुर्गे को क्यों नहीं? यह सब सोना तो मेरे पास होना चाहिये था।"

और फिर एक दिन उसने एक प्लान बनाया। उसने अपनी झाड़ू उठायी और बिल्ले को घर से बाहर निकाल दिया — "ओ आलसी जीव, जा दुनियॉ में बाहर जा और सोना ढूँढ कर ला। और तब तक वापस मत आना जब तक हमारे पास खाने के लिये काफी न हो जाये। तू सुन रहा है न?"

बिल्ले ने ठीक सुना और बाहर चल दिया। रास्ते में उसको सोने का एक टुकड़ा मिल गया जो आधे मुर्गे से आते समय गिर गया था। उसने उसको तुरन्त ही निगल लिया पर उसको और सोना कहीं नहीं मिला।

सो उसने अपना पेट सॉप, चुहिया, बालों वाले मकड़े आदि जानवरों से भर लिया। जब वह उन्हें और नहीं निगल सका तो वह घर वापस आ गया।

बुढ़िया अपने बिल्ले के देख कर बहुत खुश हुई — "अरे तू तो अपना पेट भर कर बड़ी जल्दी वापस आ गया। मैं अपनी झाड़ू ले आऊँ।"

वह जल्दी जल्दी अन्दर गयी और झाड़ू ले कर आयी और उससे बिल्ले को जरूरत से भी ज़्यादा ज़ोर से मारा। फिर भी बिल्ले ने सोने का एक टुकड़ा उगल दिया। सोना देख कर वह बहुत खुश हुई पर एक टुकड़ा तो उसके लिये काफी नहीं था सो उसने बिल्ले को दूसरी बार मारा।

दूसरी बार के मारने से उसमें से एक सॉप लहराता हुआ निकल आया और उस बुढ़िया के जूते की तरफ भागा। वह चिल्लायी और उसने बिल्ले को और ज़ोर से मारा। फिर तो उसके पेट से चुहिया ओर बालों वाले मकड़े निकल पड़े।

वह चिल्लायी — "यह सब क्या है? यह तूने क्या किया?"

जितनी बार वह गुस्से से बिल्ले को मारती गयी उतनी ही बार वह बिल्ला जानवर उगलता गया। इस तरह कमरे में बहुत सारे जानवर इकट्ठा हो गये।

जब उस बुढ़िया ने उस बिल्ले को आखिरी बार मारा तो बड़े बालों वाला एक बहुत बड़ा मकड़ा निकल आया। वह बहुत ही

गुस्सा था सो वह उस बुढ़िया की तरफ दौड़ा। वह बुढ़िया को जंगल तक खदेड़ कर ले गया और फिर किसी ने उन दोनों के बारे में कभी कुछ नहीं सुना।

अगर तुममें से किसी को उन दोनों के बारे में पता चल जाये तो उनसे सावधान रहना क्योंकि दोनों ही बहुत खतरनाक हैं।

बिल्ला बूढ़े और मुर्गे के पास वापस आ गया और बाकी ज़िन्दगी भर आराम से रहा।

4 आधा कम्बल[12]

आधी चीज़ों की लोक कथाओं में यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के फ्रांस देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह एक बड़ी सीख देने वाली लोक कथा है कि किस तरह हमें अपने बड़ों का ख्याल रखना चाहिये और उनका आदर करना चाहिये।

यह बहुत पहले की बात है कि फ्रांस में एक राजा रहता था। यह राजा बहुत अच्छा था और बहुत ही अच्छे से अपने लोगों की देखभाल करता था। वह हमेशा अपने लोगों को सबसे अच्छी चीज़ देने की कोशिश करता था।

यह उसकी इच्छा थी कि उसका बेटा अपनी जवानी लोगों की सेवा में उससे भी अच्छी तरह से लगा दे जितनी कि उसने खुद ने लगायी थी।

इसलिये जब वह बूढ़ा हो गया तो उसने अपनी सारी जमीन और जायदाद अपने एकलौते बेटे को दे दी। बूढ़ा राजा अपनी गद्दी से उतर गया और अपना ताज अपने बेटे के सिर पर रख दिया और उसे राजा बना दिया।

फिर उसने उससे केवल दो चीज़ें माँगी – पहली तो यह कि तुम मेरे लोगों की बहुत अच्छी तरह से देखभाल करना। और दूसरी

[12] Half a Blanket - a folktale from France, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=85
Collected and retold by Mike Lockett

बात यह कि तुम वायदा करो कि तुम मेरे बूढ़े होने पर मेरी भी देखभाल ठीक से करोगे। जितना प्यार मैंने तुम्हें दिया है उतना ही प्यार तुम भी मुझे करोगे। मुझे विश्वास है कि तुम ऐसा ही करोगे।"

जब इन दोनों बातों का वायदा हो गया तो राजा ने फिर रस्मी तौर पर अपने बेटे को राजा बना दिया।

बेटे ने पहले तो अपने पिता की बात मानी और पाया कि उनकी बात मान कर उसका खजाना बढ़ रहा था और उसके लोग उससे बहुत सन्तुष्ट थे और अच्छी तरह से रह रहे थे। वह अपने पिता की देखभाल भी बहुत अच्छी तरह कर रहा था।

पर यह सब बहुत दिनों तक न चल सका। यह सब बस तभी तक चला जब तक उसकी शादी नहीं हो गयी। उसकी पत्नी उसके पिता को नहीं चाहती थी। वह सोचती थी कि उसका पिता हमेशा ही सड़क पर रहता था।

इसके अलावा उसको लगता था कि उसका पति उसकी बजाय अपने पिता की ज़्यादा सुनता था।

एक दिन उसने अपने पति से कहा — "यह बुड्ढा हमेशा ही खाने की मेज पर खाँसता रहता है जिससे मेरा तो खाने का सारा मजा ही चला जाता है।

इसके अलावा वह तुमको अभी भी बच्चा ही समझते हैं। वह हमेशा ही तुमको राज्य चलाने के लिये सलाह देते रहते हैं। तुम अब राजा हो कोई बच्चा तो हो नहीं।

वह जब राजा थे तब राजा थे। उन्होंने अपने समय में राज किया पर अब जब वह राज नहीं कर सकते तो वह राज्य उन्होंने तुमको दे दिया। तो फिर अब वह बीच में अपनी टॉग क्यों अड़ाते रहते हैं।"

अपनी पत्नी को खुश करने के लिये बेटे ने अपने पिता को रहने और लेटने के लिये सीढ़ियों के नीचे एक जगह दे दी। उधर पत्नी ने भी अपने चौकीदारों को यह हुक्म दे दिया कि वे राजा को महल के अन्दर न आने दें।

जो जगह राजा को लेटने के लिये दी गयी थी वह बहुत ठंडी थी और वहॉ हवा भी बहुत आती थी। उस जगह वह भूसे के ऐसे बिस्तर पर जैसा कि किसी कुत्ते के लिये बनाया जाता है कई महीनों तक लेटा रहा।

उसका खाना वहीं सीढ़ियों के नीचे पहुॅच जाता था। वह अपने ही किले में एक बन्दी की तरह रह रहा था। वह बूढ़ा आदमी बेचारा इस सबसे बहुत दुखी था।

फिर एक दिन रानी ने एक बेटे को जन्म दिया जो एक बहुत ही गुणवान लड़के के रूप में बड़ा हुआ। इस बात की चिन्ता न करते हुए भी कि उसकी मॉ क्या कहती रहती थी वह अपना समय

अपने बाबा के पास सीढ़ियों के नीचे उनसे बातें करने में और उनसे कुछ सीखने में गुजारा करता था।

उसका दिल बहुत ही नर्म था और वह सबकी बहुत अच्छी तरह से देखभाल करता था। उसको घर में से जो कुछ भी खाने और पीने के लिये मिल जाता था उसमें से कुछ वह अपने बाबा के लिये भी ले आता था।

उसके बाबा को उसका लाया खाना पीना जितना पसन्द था उससे ज़्यादा उसको अपने पोते की नर्मी और प्यार पसन्द था जो उसके बर्ताव में झलकता था।

एक दिन बाबा ने अपने पोते से ठंड से बचने के लिये घोड़े को ओढ़ाने वाला एक पुराना कम्बल माँगा तो वह लड़का उसके लिये कम्बल लाने दौड़ गया। उसको घुड़साल में एक अच्छा सा कम्बल मिल गया सो उसने उसके दो टुकड़े कर दिये।

बच्चे के पिता ने उसे कम्बल फाड़ते हुए देख लिया तो उससे पूछा कि वह घोड़े के कम्बल का क्या कर रहा था। उसने अपने पिता को बताया कि वह उसमें से आधा कम्बल उसके पिता के बिछौने के लिये ले जा रहा था।

उसके पिता राजा ने पूछा — "पर तुम उनके लिये केवल आधा ही कम्बल क्यों ले कर जा रहे हो?"

बच्चे ने जवाब दिया — "मैं यह दूसरा आधा कम्बल आपके लिये बचा कर रख रहा हूँ ताकि जब मैं राजा बन जाऊँ तो यह

दूसरा आधा कम्बल सीढ़ियों के नीचे आपके लिये इस्तेमाल करने के काम आयेगा।"

अब तुम यह सोच कर बताओ कि यह सुनने के बाद –

क्या उस बेटे के पिता के विचार अपने पिता के लिये कुछ बदले होंगे?

या महल में उस बूढ़े राजा के लिये कुछ बदला होगा?

क्या आगे आने वाले समय का विचार आज की दशा बदल सकता है?

5 आधा नौजवान[13]

आधे नौजवान की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है। तुम लोग सोच रहे होगे कि यह "आधा नौजवान क्या होता है?"

तो लो पढ़ो इटली देश की यह लोक कथा आधा नौजवान और देखो कि आधा नौजवान कैसा होता है।

एक बार एक लड़की को बच्चे की आशा हुई तो उसकी पार्सले[14] खाने की इच्छा हुई। उसके घर के बराबर में एक जादूगरनी रहती थी। इस जादूगरनी का पार्सले का एक बहुत बड़ा बागीचा था और उस बागीचे का दरवाजा हमेशा खुला रहता था।

क्योंकि पार्सले वहाँ बहुत पैदा होता था सो उस बागीचे में कोई भी अन्दर आ सकता था और अपने आप पार्सले तोड़ कर ले जा सकता था।

सो वह लड़की भी उस जादूगरनी के बागीचे में पार्सले तोड़ने के लिये चली गयी। उसकी पार्सले खाने की इच्छा इतनी ज़्यादा थी कि

---

[13] Cloven Youth – a folktale from Venice, Italy, Europe. Adapted from the book: "Italian Folktales" by Italo Calvino. 1956. Translated by George Martin in 1980.

[14] Parsley is a kind of herb, looks like green coriander leaves (cilanthro). It is most used in Italian dishes both as fresh and dried herbs. See its picture above.

वह उस जादूगरनी के बागीचे का करीब करीब आधा पार्सले खा गयी।

जब वह जादूगरनी वापस आयी तो उसने देखा कि उसके बागीचे से तो आधा पार्सले गायब हो चुका था। उसने सोचा कि वह अगले दिन उस पर नजर रखेगी कि उसके पार्सले के बागीचे से इतना सारा पार्सले कौन ले गया।

वह लड़की वहाँ बचा हुआ पार्सले खाने के लिये अगले दिन भी गयी। उसने मुश्किल से उस बागीचे के पार्सले का आखिरी पौधा खाया होगा कि वह जादूगरनी वहाँ आ गयी और बोली — "आहा, तो वह तुम हो जो मेरे बागीचे का सारा पार्सले खा गयीं।"

वह लड़की बेचारी डर गयी और गिड़गिड़ाती हुई बोली — "मेहरबानी कर के मुझे जाने दो। मैं एक बच्चे की माँ बनने वाली हूँ। मेरी पार्सले खाने की इच्छा हुई तो मैं यहाँ आ गयी।"

जादूगरनी बोली — "ठीक है मैं तुमको जाने देती हूँ पर जो भी बच्चा तुमको होगा, चाहे वह लड़का हो या लड़की, जब वह सात साल का हो जायेगा तब वह आधा मेरा होगा और आधा तुम्हारा।"

यह सुन कर वह लड़की बहुत डर गयी सो वह जल्दी से उसको हाँ कर के वहाँ से चली आयी। समय आने पर उसके एक बेटा हुआ। बेटा अपने समय से बड़ा होने लगा।

जब उसका बेटा छह साल का हो गया तो एक दिन सड़क पर उसको वह जादूगरनी मिली। उस बच्चे को देख कर वह बोली —

"अपनी मॉ को याद दिलाना कि बस अब एक साल ही और बाकी है।"

बच्चा घर आया और अपनी मॉ से बोला — "मॉ मुझे अपनी पड़ोसन मिली थी। वह कह रही थी कि अपनी मॉ को याद दिलाना कि बस अब एक साल ही और बाकी है।"

मॉ बोली — "अगर अबकी बार वह तुमको फिर मिले और फिर यह कहे कि "बस अब एक साल ही और बाकी है।" तो तुम कहना कि "तुम पागल हो"।"

जब उस बच्चे के सात साल के होने में तीन महीने बाकी रह गये तो एक दिन उस पड़ोसन ने फिर उस बच्चे से कहा — "अपनी मॉ से कहना कि बस अब केवल तीन महीने ही और बाकी रह गये हैं।"

बच्चे ने घर आ कर अपनी मॉ को अपनी पड़ोसन के शब्द जैसे के तैसे दोहरा दिये। उसकी मॉ ने फिर कहा कि "अगर अबकी बार वह तुमसे ऐसा वैसा कुछ कहे तो तुम उससे कहना कि "मैम तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है क्या"।"

बच्चे ने मॉ के शब्द उस पड़ोसन को बोल दिये तो पड़ोसन बोली — "देखते हैं किसका दिमाग खराब होता है।"

तीन महीने बाद बुढ़िया जादूगरनी उस बच्चे को सड़क पर से उठा कर ले गयी और अपने घर ले जा कर उसे एक मेज पर पीठ

के बल लिटा दिया। फिर एक बड़ा सा चाकू उठाया और सिर से ले कर पैर तक उसको दो बराबर हिस्सों में बॉट दिया।

एक हिस्से से उसने कहा — "तुम घर जाओ।" और दूसरे हिस्से से कहा — "तुम मेरे पास रहो।" सो एक हिस्सा अपनी मॉ के पास अपने घर चला गया और दूसरा हिस्सा उसके अपने पास रह गया।

एक हिस्सा जो घर चला गया था अपनी मॉ से जा कर बोला — "देखा मॉ? उस बुढ़िया ने मेरे साथ क्या किया और तुम कहती थी कि उसका दिमाग खराब हो गया है, वह पागल हो गयी है।"

उसकी मॉ ने गुस्से में आ कर अपने हाथ पैर फेंके पर अब वह कर ही क्या सकती थी उसका बेटा तो आधा हो ही चुका था। अब यह आधा लड़का और बड़ा होने लगा पर उसको यही पता नहीं था कि वह आगे चल कर अपनी ज़िन्दगी में क्या करेगा।

आखिर उसने मछियारा बनने का निश्चय किया। एक दिन जब वह ईल मछली[15] पकड़ रहा था तो उसने एक इतनी लम्बी ईल मछली पकड़ी जितना लम्बा वह खुद था।

जब उसने उसे बाहर खींचा तो वह ईल बोली — "तुम मुझे जाने दो और फिर तुम मुझे दोबारा पकड़ना।"

[15] Eel fish – a kind of fish like a snake. See its picture above.

यह सुन कर उस लड़के ने उस मछली को फिर से पानी में फेंक दिया। उस मछली के कहे अनुसार उसने अपना मछली पकड़ने वाला जाल फिर से पानी में डाला और जब फिर से उसे खींचा तो अबकी बार उस जाल में बहुत सारी ईल मछलियॉ थीं।

वह अपनी ईल मछलियों से भरी नाव ले कर किनारे आ गया और उस दिन उसने उनको बेच कर बहुत सारा पैसा कमाया।

अगले दिन उसने वही बड़ी ईल मछली फिर से पकड़ ली। अबकी बार उसने लड़के से कहा — "मुझे जाने दो और छोटी ईल की कसम खा कर जो कुछ भी तुम मॉगोगे तुम्हारी वह इच्छा पूरी होगी।" सो उसने उस बड़ी ईल को फिर पानी में छोड़ दिया।

एक दिन जब वह मछली पकड़ने जा रहा था तो वह राजा के महल के पास से गुजरा। महल की खिड़की पर राजा की बेटी अपनी दासियों के साथ बैठी हुई थी।

उसने रास्ते पर जाता एक ऐसा आदमी देखा जो सिर से पैर तक आधा था – आधा शरीर, आधा सिर, एक बॉह, एक टॉग। वह ऐसे अजीब आदमी को देख कर हॅस पड़ी।

उसकी हॅसी की आवाज सुन कर लड़के ने ऊपर देखा और बोला — "तुम मेरे ऊपर हॅस रही हो? छोटी ईल के लिये, राजा की बेटी के मुझसे एक बच्चा होगा।" यह कह कर वह आगे बढ़ गया।

कुछ समय बाद ही राजा की बेटी को बच्चे की आशा हुई और उसके माता पिता को इस बात का पता चल गया। उन्होंने अपनी बेटी से पूछा — "इसका क्या मतलब है?"

बेटी बोली — "पिता जी, मैं भी आप ही की तरह से इस बात से बिल्कुल अनजान हूँ। मुझे कुछ नहीं मालूम।"

माता पिता बोले — "हमारी यह समझ में नहीं आया कि हमारी तरह तुम इस बात से अनजान कैसे हो? इसका पिता कौन है?"

राजा की बेटी रुआँसी हो कर बोली — "पिता जी, मुझे सचमुच ही कुछ पता नहीं है। मैं इसके बारे में वाकई कुछ भी नहीं जानती।"

उसके माता पिता उससे कई बार पूछते रहे और यह भी कहते रहे कि वह उनको सच सच बता दे। उसकी अगर कोई भी गलती होगी तो वे उसको माफ कर देंगे पर वह अपनी इसी बात पर अड़ी रही कि उसको इस बारे में कुछ पता नहीं है और वह बेकुसूर है।

जब उस लड़की ने कुछ बता कर नहीं दिया तो उन्होंने उसको बुरा भला कहना शुरू किया और उसके साथ बुरा बर्ताव करना शुरू कर दिया।

समय आने पर उसके एक बेटा हुआ। बजाय खुश होने के उस लड़की के माता पिता खूब रोये क्योंकि उनके घर में एक बिना बाप का बेटा पैदा हुआ था।

इस बात की पहेली सुलझाने के लिये उन्होंने एक जादूगर को बुलवाया। जादूगर बोला — "एक साल तक इन्तजार करो जब तक यह एक साल का होता है तब शायद कुछ पता चले।"

एक साल के बाद जादूगर ने कहा — "तुमको इस बच्चे के जन्म पर एक शानदार दावत देनी चाहिये और उसमें सारे कुलीन लोगों को बुलाना चाहिये।

जब वे सब यहाँ आ जायें तो एक सोने का और एक चाँदी का सेब इस बच्चे के हाथ में देना चाहिये।

फिर यह बच्चा उन सेबों को ले कर सबके सामने जाये। यह बच्चा सोने का सेब अपने पिता को दे देगा और चाँदी का सेब अपने नाना को दे देगा।"

सो राजा ने अपने धेवते[16] के लिये दो सेब बनवाये एक सोने का और एक चाँदी का। और फिर उसके जन्म की खुशी में एक बहुत बड़ी शानदार दावत का इन्तजाम किया।

इस दावत में बहुत सारे जाने माने लोगों को बुलाया गया। एक बड़े बन्द कमरे में दीवार के सहारे कुर्सियाँ लगवायी गयीं। जब लोग वहाँ आना शुरू हुए तो उनको उन कुरसियों पर बिठाया गया।

[16] Grandson – daughter's son is called Dhevataa or Navaasaa

जब सब लोग वहॉ आ गये तो बच्चे को उसकी आया के साथ वहॉ लाया गया और उसके हाथ में दो सेब, एक सोने का और एक चॉदी का, दे दिये गये।

बच्चे की आया बच्चे और सेबों को ले कर उस कमरे में चारों तरफ घूमने लगी। चारों तरफ घूम कर वह बच्चा राजा के दिये हुए सेबों के साथ वापस आ गया और उसने चॉदी का सेब ला कर राजा को दे दिया।

राजा बोला — "मैं इतना तो अच्छी तरह जानता हूॅ कि मैं तुम्हारा नाना हूॅ पर मैं जानना चाहता हूॅ कि तुम्हारा पिता कौन है।" बच्चे को उस कमरे में कई बार चक्कर लगवाया पर वह बिना किसी को सेब दिये हुए ही राजा के पास वापस आ गया।

वह जादूगर फिर से बुलवाया गया तो उसने कहा कि अबकी बार आप अपने शहर के सब गरीब आदमियों को बुलवाइये। सो राजा ने अबकी बार अपने राज्य के सारे गरीब लोगों के लिये एक दावत का इन्तजाम किया और उसमें उन सबको बुलवाया।

जब उस आधे नौजवान ने यह सुना कि राजा के महल में सब गरीबों के लिये एक दावत हो रही है तो वह अपनी मॉ से बोला — "मॉ मेरी सबसे अच्छी वाली आधी कमीज, आधी पैन्ट, एक जूता, और मेरी आधी टोपी निकाल दो क्योंकि आज मैं राजा के महल में जा रहा हूॅ। आज उन्होंने मुझे वहॉ खाने का न्यौता दिया है।"

माँ ने वैसा ही किया और वह अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन कर राजा के महल की तरफ चल दिया।

कमरा खचाखच भरा था – मछियारे, भिखारी सब तरह के गरीब वहाँ जमा थे। वे सब बैन्चों पर बैठे थे। राजा ने उनके लिये भी बैन्चें दीवार के सहारे सहारे ही लगवा रखी थीं।

जब सब लोग आ गये तो बच्चे की आया बच्चे को ले कर वहाँ आयी। राजा ने बच्चे के हाथ में सोने का सेब दे कर आया को उसको कमरे में चारों तरफ घुमाने के लिये कहा।

आया बच्चे को ले कर चल दी। घुमाते घुमाते वह उस बच्चे से कहती जाती थी — "बेटे, यह सेब अपने पिता को दे दो।"

जैसे ही वह बच्चा उस आधे आदमी के पास पहुँचा तो वह चिल्लाया — "पिता जी यह सेब लीजिये।"

सारे गरीब आदमी यह सुन कर ज़ोर से हँस पड़े — "हा हा हा हा। ज़रा देखो तो राजा की बेटी पड़ी भी तो किसके प्रेम में पड़ी।"

केवल एक राजा ही था जो उस समय पूरे तरीके से शान्त था। वह बोला — "अगर ऐसा है तो यही मेरी बेटी का पति होगा।" और उसने अपनी बेटी की शादी उस आधे नौजवान के साथ कर दी।

नये शादीशुदा पति पत्नी चर्च से निकले तो उन्होंने सोचा कि उनको वहॉ से ले जाने के लिये कोई बग्घी उनका इन्तजार कर रही होगी पर वहॉ कोई बग्घी तो नहीं, हॉ एक बड़ा सा खाली बैरल[17] रखा था।

राजा ने उस बैरल में उस आधे नौजवान, उसकी पत्नी और उनके बच्चे को रख कर उस बैरल को बन्द कर दिया और उसे समुद्र में फेंक दिया।

समुद्र में उस समय तूफान आया हुआ था सो वह बैरल लहरों के ऊपर खूब ऊपर नीचे उछल रहा था। कुछ ही पलों में वह ऑखों से ओझल हो गया। राजा के महल के हर आदमी ने सोचा कि वह बैरल तो अब हमेशा के लिये समुद्र में चला गया।

पर वह बैरल डूबा नहीं था। वह बाहर की तरफ तैरने लगा। आधे नौजवान ने महसूस किया कि राजा की बेटी बहुत डरी हुई थी सो उसने उससे कहा — "प्रिये, क्या तुम चाहती हो कि मैं यह बैरल समुद्र के किनारे ले चलूँ?"

राजा की बेटी डर से सहमी सी बोली — "हॉ, अगर तुम इस को वहॉ ले जा सकते हो तो।" पर उसके कहने से पहले ही यह हो गया।

---

[17] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter. See its picture above.

"छोटी ईल के लिये, ओ बैरल, समुद्र के किनारे चलो।" और वह बैरल समुद्र के किनारे आ कर लग गया। उस आधे नौजवान ने उस बैरल का तला तोड़ा और वे तीनों उसमें से बाहर निकल आये।

यह खाना खाने का समय था सो वह आधा नौजवान बोला — "छोटी ईल के लिये, हमको खाना चाहिये।" बस तुरन्त ही एक मेज लग गयी जिस पर बहुत सारा खाना लगा था।

जब वे पेट भर कर खाना खा चुके तो उस आधे नौजवान ने अपनी पत्नी से पूछा — "क्या तुम मुझसे खुश हो?"

राजा की बेटी बोली — "तुम मुझे तब और ज़्यादा अच्छे लगते जब तुम पूरे होते।"

इस पर उसने अपने आप से कहा — "छोटी ईल के लिये, क्या मैं पूरा और एक सुन्दर नौजवान बन सकता हूँ?" तुरन्त ही वह आधा नौजवान एक सुन्दर और पूरा नौजवान बन गया और एक कुलीन आदमी की तरह दिखायी देने लगा।

उसने राजा की बेटी से फिर पूछा — "अब तो तुम खुश हो न?"

"मैं तब ज़्यादा खुश होती जब तुम एक बढ़िया महल में रह रहे होते। बजाय इसके कि हम समुद्र के इस उजाड़ किनारे पर खड़े हुए हैं।"

उस नौजवान ने फिर कहा — "छोटी ईल के लिये, क्या हम एक बढ़िया महल में रह सकते हैं जिसमें दो सेब के पेड़ लगे हों। एक सेब के पेड़ पर सोने के सेब लगे हों और दूसरे पेड़ पर चॉदी के सेब लगे हों। हमारे पास बहुत सारे दास दासियॉ हों, रसोइये हों और वह सब कुछ हो जो एक महल में होना चाहिये।"

तुरन्त ही वहॉ सब कुछ आ गया – महल, सेब के पेड़, रसोइये, दास, दासियॉ, आदि आदि।

कुछ दिन बाद उस आधे नौजवान ने जो अब आधा नहीं रह गया था बल्कि एक सुन्दर और पूरा नौजवान बन गया था सब राजाओं और कुलीन लोगों को एक दावत का न्यौता भेजा। इसमें उसकी पत्नी के पिता भी शामिल थे।

जब सब लोग उसके घर आये तो उस नौजवान ने उन सबका अपने दरवाजे पर स्वागत किया और कहा — "मैं आप सबको चेतावनी देता हूॅ कि कोई भी इन सोने और चॉदी के सेबों को न छुए। अगर आप लोग इनको छुऐंगे भी तो फिर भगवान ही आप की रक्षा करे।"

वे सब बैठ गये और खाने पीने लगे। आधे नौजवान ने चुपके से कहा — "छोटी ईल के लिये, एक सोने का और एक चॉदी का सेब मेरे ससुर जी की जेब में चला जाये।"

ऐसा ही हुआ। एक सोने का और एक चॉदी का सेब उस नौजवान के ससुर की जेब में चला गया।

जब सबने खाना खा लिया तो वह अपने सब मेहमानों को अपने बागीचे में घुमाने के लिये ले गया तो वहाँ पाया कि उसके दो सेब गायब हैं। उस नौजवान ने पूछा — "अरे मेरे दो सेब गायब हैं। किसने लिये हैं मेरे सेब?"

सब बोले "मैंने नहीं लिये", "मैंने नहीं लिये"।

आधा नौजवान बोला — "मैंने आप सबको पहले ही कहा था कि इन सेबों को छूना नहीं पर अब मैं मैजेस्टी की तलाशी लेने के लिये मजबूर हूँ।"

सो वह भीड़ में खड़े हर राजा रानी की तलाशी लेता चल दिया। आखीर में वह अपनी पत्नी के पिता के पास आया और उनकी दोनों जेबों में उसने दो सेब पाये।

वह बोला — "किसी और की तो सेबों को छूने की हिम्मत भी नहीं हुई और आपने दो सेब चुरा लिये? आपको मुझे इन दोनों सेबों का हिसाब देना पड़ेगा।"

राजा ने उसको समझाने की कोशिश करते हुए कहा — "पर मैं इन सेबों के बारे में कुछ भी नहीं जानता। मैंने इनको नहीं चुराया। मैंने तो इनको छुआ भी नहीं। मैं कसम खाता हूँ।"

आधा नौजवान बोला — "पर सारे सबूत तो आपके खिलाफ हैं फिर भी आप कह रहे हैं कि आप बेकुसूर हैं?"

"हाँ मैं यह इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि मैं बेकुसूर हूँ।"

"ठीक। जैसे आप बेकुसूर हैं वैसे ही आपकी बेटी भी तो बेकुसूर हो सकती थी। पर जो बर्ताव आपने उसके साथ किया अगर वैसा ही बर्ताव मैं आपके साथ करूँ तो शायद इसमें कोई अन्याय नहीं होगा।"

उसी समय उसकी पत्नी भी आ गयी और बोली — "अब ऐसा कुछ मत कहना या करना कि मेरे पिता को मेरी वजह से कुछ सहना पड़े। वह अगर मेरे लिये बेरहम थे भी फिर भी वह मेरे पिता हैं और मैं तुमसे उनके ऊपर दया करने की भीख माँगती हूँ।"

आधे नौजवान ने दया कर के राजा को माफ कर दिया।

राजा अपनी बेटी को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश था जिसको उसने मरा समझ लिया था और साथ में यह जान कर भी बहुत खुश था कि वह बेकुसूर थी।

राजा उन तीनों को फिर अपने घर ले गया। वहाँ वे सब खुशी खुशी रहने लगे। जब तक वे जिये तब तक सब आपस में हिल मिल कर रहे।

6 एक लावारिस लड़की[18]

यह एक आधी बुढ़िया की लोक कथा है जो अफ्रीका के नाइजीरिया देश में कही सुनी जती है।

एक बार एक आदमी था जो अपनी दो पत्नियों और दो बेटियों के साथ रहता था। कुछ समय बाद उसकी एक पत्नी अपनी बेटी चिका[19] को छोड़ कर मर गयी। उसकी दूसरी पत्नी ही अपनी सौत की बेटी को पालने पोसने लगी।

पर उस लड़की चिका की वह सौतेली मॉ चिका के लिये बहुत ही बुरी थी। वह उसको कभी प्यार नहीं करती थी। वह उसके साथ नौकर से भी बुरा बर्ताव करती थी।

वह अपनी बेटी इनूमा[20] को बहुत प्यार करती थी। उसको वह कभी कुछ काम नहीं करने देती थी और उसको बहुत आराम से रखती थी। इस तरह इनूमा बहुत बिगड़ गयी थी। वह किसी की इज़्ज़त भी नहीं करती थी।

हालॉकि घर में दोनों बहिनों को काम करना चाहिये था पर चिका ही घर का सारा काम करती थी। वह घर में सारा काम बहुत ही अच्छा करती थी और कभी शिकायत भी नहीं करती थी।

---

[18] The Orphan Girl – an Igbo folktale from Nigeria, West Africa.
Adapted from the Book, "The Orphan Girl and the Other Stories", by Offodile Buchi. 2001.

[19] Chika – name of the orphan girl

[20] Enuma – name of the other girl

जब वे दोनों खाना खातीं तो इनूमा को बहुत बढ़िया खाना मिलता और चिका को अक्सर उसका बचा हुआ खाना ही मिलता।

उसकी सौतेली माँ ने उससे कह रखा था — "अगर मैंने किसी के मुँह से सुना कि तू यह खाना खाती है तो मैं तुझे मार दूँगी।" इसलिये चिका ने इस बात की कभी किसी से शिकायत भी नहीं की। वह इसी से बहुत सन्तुष्ट थी कि उसको कम से कम कुछ तो खाने को मिल रहा था।

इस गाँव में यह रिवाज था कि इके बाजार[21] के दिन नदी से पानी लाने के लिये कोई भी आदमी नहीं जा सकता था क्योंकि वह नदी आदमियों और भूतों की दुनियाँ की हद पर थी। नदी के इस पार आदमी रहते थे और उस पार भूत रहते थे।

लोगों को पंडितों[22] ने बताया हुआ था कि इके बाजार वाले दिन भूत उस नदी पर पानी लेने आते थे और दूसरे तीन बाजार दिन आदमियों के वहाँ पानी भरने के लिये थे।

एक दिन एनक्वो[23] बाजार वाले दिन जब परिवार खेतों से रात गये लौटा तो चिका को पता चला कि उनके घर में पानी कम था। अब क्योंकि अगला दिन इके बाजार दिन था इसलिये उसने काफी पानी उस दिन के लिये बचा कर रखा हुआ था पर फिर भी वह पानी किसी वजह से अगले दिन के लिये कम रह गया था।

---

[21] Eke market day

[22] Translated for the word "Diviner" – means who tell future by divine means

[23] Nkwo – maybr these names are Sunday, Monday etc in Nigerian language

शाम को खाना खाने के बाद इनूमा नहाना चाहती थी पर चिका ने मना कर दिया क्योंकि कि वह पानी उस दिन घर में आखिरी पानी था।

उसने कहा — "जो पानी बचा है वह कल के लिये भी मुश्किल से ही काफी है और तुम नहाना चाहती हो?"

इनूमा बोली — "पर मुझे नहाना जरूरी है।"

चिका ने कहा — "पर हम दोनों तो खेत पर अभी तीसरे पहर ही तो नहाये थे।"

दोनों लड़कियॉ पानी के घड़े के ऊपर अपनी पूरी ताकत से लड़ने लगीं जैसे कि उनकी ज़िन्दगी ही उस घड़े में हो। चिका ने अपनी दोनों बॉहों से उस घड़े को चारों तरफ से पकड़ लिया ताकि इनूमा उसका पानी न ले ले और इनूमा उस घड़े को चिका से छीनने लगी।

जब वे आपस में इस घड़े के पानी के ऊपर बहस कर रही थीं और घड़े को अपनी तरफ खींच रही थीं तो इस बीच उस घड़े का बहुत सारा पानी छलक कर बिखर गया।

इनूमा की मॉ उनका बीच बचाव करने आयी। जब लड़कियों ने दरवाजे पर आहट सुनी तो चिका ने सौतेली मॉ के डर से उस घड़े पर से अपनी पकड़ अचानक छोड़ दी। इससे इनूमा को धक्का लगा और वह पीछे जा गिरी।

इससे वह घड़ा तो टूट ही गया और जो कुछ भी पानी उस घड़े में था वह भी सब बिखर गया। चिका बच्चों की तरह हॅस पड़ी।

उसकी सौतेली मॉ चिल्लायी — "यह क्या कोई हॅसने की बात थी?"

बड़ी मुश्किल से अपनी हॅसी छिपा कर चिका सहम कर बोली — "नहीं मॉ।"

मॉ ने पूछा — "यहॉ क्या हो रहा है?"

दोनों लड़कियों ने अपना अपना मामला पेश किया पर चिका को बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं हुआ जब इनूमा इस घटना के बारे में बिल्कुल भी झूठ नहीं बोली क्योंकि इनूमा अपने दोनों बहिनों के मामले में हमेशा सच ही बोलती थी।

उसके झूठ बोलने की कोई वजह भी नहीं थी खास कर के जब जबकि उसकी अपनी मॉ जज थी। इनूमा को पता था कि चाहे कैसा भी मामला हो उसकी मॉ उसी की तरफ से बोलेगी।

चिका की सौतेली मॉ ने चिका की तरफ इशारा कर के कहा — "मैं जानती थी कि वह तू ही होगी। इसका मतलब यह है कि तूने यह नहीं देखा कि घर में पानी काफी था कि नहीं और तू उसको नहाने नहीं देना चाहती।

देखना कि कल तेरे पिता कहीं जागने पर अपना नहाने का पानी न मॉग बैठें और न ही मैं अपना खाना बनाने के लिये।"

चिका बोली — "पर मॉ कल तो इके बाजार दिन है।"

मॉ बोली — "ओह, यह तो मेरे लिये एक नयी खबर है। यह तेरी समस्या है मेरी नहीं, है न? बस वह ध्यान में रखना जो मैंने तुझसे कहा है नहीं तो मैं तेरा मॉस गिद्धों को खिला दूँगी।" इतना कह कर वह घूमी और घर के अन्दर चली गयी।

इस बीच इनूमा ने अपने कपड़ों से पानी निचोड़ा, अपने पीछे से मिट्टी झाड़ कर साफ की और फिर अपनी मॉ के पीछे पीछे घर के अन्दर चली गयी।

जब वह घर के अन्दर घुस रही थी तो वह चिका से बोली — "अब बता हॅसने की किसकी बारी है और रोने की किसकी?"

अगले दिन चिका मुर्गे की दूसरी बॉग से पहले ही उठ गयी। उसने पानी का सबसे बड़ा घड़ा उठाया जो वह ला सकती थी और पानी लाने नदी की तरफ चल दी।

वह उधर कॉपती कॉपती सी चली जा रही थी और अपने ची[24] से प्रार्थना करती जा रही थी — "अगर मॉ अपने बच्चों के लिये इसी तरह से दुआ करती हैं तो मेरे साथ जो कुछ भी बुरा हो हो जाये, पर अगर वे ऐसा नहीं करतीं तो मेरा ची मेरी रक्षा करे।"

चलते चलते हर कदम पर वह डर के मारे सिकुड़ती जा रही थी उसको लग रहा था कि सारी घासें उसे घूर रहीं थीं। जल्दी ही वह सड़क पर एक ऐसी जगह आ गयी जहॉ उसे लगा कि बहुत सारे बिच्छू सड़क पर बिखरे पड़े हैं।

[24] Chi – means personal god

उसने अपना घड़ा जितनी कस कर वह पकड़ सकती थी अपने बॉये हाथ से कस कर पकड़ लिया और फिर अपना दाहिना हाथ अपनी ऑखों पर फेर कर दोबारा उस जगह को देखा जहॉ उसने वे बिच्छू देखे थे कि कहीं उसकी आखों को धोखा तो नहीं हुआ।

पर नहीं वह उसकी ऑखों का धोखा नहीं था। वे बिच्छू वहॉ थे। जब उसको विश्वास हो गया कि जो कुछ उसने देखा था वह ठीक ही देखा था तो उसने उन बिच्छुओं से प्रार्थना की कि वह उसको रास्ता दे दें।

उसने अपनी कहानी उनको सुनाते हुए यह गाया —

मिस्टर बिच्छुओ, अच्छे बिच्छुओ
एक गरीब बेसहारा पर दया करो
यह मेरी इच्छा नहीं थी कि मैं यहॉ आऊॅ
मेरी सौतेली मॉ ने मुझे यहॉ भेजा है
हालॉकि पंडितों ने कहा है कि यहॉ किसी को नहीं आना
पर मॉ का कहना न मानना तो भगवान ने भी मना कर रखा है

उसकी यह कहानी सुन कर सारे बिच्छू रास्ते से गायब हो गये और वह अपने रास्ते चल दी।

अभी वह ज़्यादा दूर नहीं गयी थी कि उसे रास्ते में बहुत सारे सॉप दिखायी दिये। वे सब एक दूसरे से लिपटे हुए एक बहुत बड़े ढेर के रूप में वहॉ पड़े थे। चिका तो उनको देख कर बहुत ही डर

गयी। वह तो चीख कर ऐसे कूद गयी जैसे हाथी घास[25] ने उसकी नंगी टॉगों को छू लिया हो।

जब उसकी सॉस में सॉस आयी तो उसने सॉपों से भी प्रार्थना की। उसने उनको भी अपनी कहानी सुनायी और अपना पहला वाला गीत गाया। आश्चर्य, उसका गीत सुन कर वे सॉप भी चले गये।

सॉपों के जाने के बाद उसने चैन की सॉस ली और वह फिर अपने पक्के इरादों के साथ आगे चल दी। चलते चलते वह उन सॉपों को गिनने की कोशिश करने लगी जिनको उसने वहॉ देखा था।

पर इतने में ही बहुत सारे बड़े बड़े शेरों की दहाड़ से उसका ध्यान बॅट गया। एक शेरनी उसकी तरफ बढ़ी।

उसको देखते ही चिका के दिमाग में शेरनी के शिकार की कहानियॉ कि शेरनी कैसे शिकार करती है बिजली की सी तेज़ी से दौड़ गयीं। उसने फिर अपना वही गीत गाया और आश्चर्य कि वे सारे शेर भी गायब होगये।

चिका इन सब परेशानियों को झेलती हुई फिर आगे बढ़ी। आगे चल कर उसको एक बुढ़िया मिली जो अपने सिर पर चल रही थी।

[25] Elephant Grass or Ugandan grass – a kind of fodder grass mostly found in East African countries

फिर दो नारियल दिखायी दिये जो आपस में एक दूसरे को तोड़ने की कोशिश कर रहे थे। उसके बाद उसने कई सारे कपड़े देखे जो नदी के किनारे अपने आप ही धुल रहे थे।

जब उसने पानी लेने के लिये नदी में पैर रखा तो कोई नाक से बोलता हुआ सुनायी दिया — "तुम यहाँ क्या कर रही हो मेरी बच्ची?"

चिका ने ऊपर देखा नीचे देखा, इधर देखा उधर देखा, पर उसे कोई दिखायी नहीं दिया। इससे पहले कि वह कोई जवाब देती वही आवाज फिर बोली — "तुम्हें इधर उधर देखने की कोई जरूरत नहीं क्योंकि तुम जो कुछ देखोगी वह तुमको देखने में अच्छा नहीं लगेगा।"

पर चिका को उस आवाज को बोलने वाले से डर कम लग रहा था और उसको देखने की उत्सुकता ज्यादा हो रही थी। अब तक उसका सामना केवल खतरनाक जानवरों और अजीब अजीब चीजों से ही हुआ था पर अब एक आदमी जो बोल रहा था... उसको देखना तो जरूरी था।

चिका ने उस आवाज को नमस्ते की और उससे पूछा — "क्या आप ठीक से सोयीं?"

आवाज ने हाँ में जवाब दिया और फिर वह आगे बोली — "बेटी, तुम्हारे जैसी प्यारी लड़की के लिये यह जगह इस दिन आने

की जगह नहीं है। क्या तुम्हारी मॉ को यह बात पता नहीं जो उसने तुमको यहॉ मरने के लिये भेज दिया?"

चिका ने उस तरफ देखा जिस तरफ से उसको लग रहा था कि वह आवाज आ रही थी। आश्चर्य कि वहॉ एक बहुत ही बदसूरत बुढ़िया खड़ी थी। उस बुढ़िया की एक ऑख थी, एक हाथ था और एक पैर था। वह आधे शरीर की बुढ़िया थी।

उसकी नाक का एक बड़ा हिस्सा कोढ़ से खत्म हो गया था जिसने उसकी आवाज को नाक से बोलने वाली बना दिया था। उसके पास एक घड़ा था जो चिका के घड़े के साइज़ से एक चौथाई था।

चिका को उस बुढ़िया पर दया आ गयी। उसने उसका घड़ा पानी से भर दिया। जब वह बुढ़िया कूद कूद कर चल रही थी तो चिका उसके पीछे पीछे उसके घर तक जा रही थी।

चिका उस बुढ़िया के साथ बहुत अच्छा महसूस कर रही थी सो उसने उसको अपनी सारी कहानी सुना दी। उसने उसको बताया कि किस तरह उसकी मॉ मर गयी थी। किस तरह उसकी सौतेली मॉ उसका पालन पोषण कर रही थी। और किस तरह वह घर का सारा काम करती थी।

उसने उसको पानी का घड़ा टूटने की घटना भी बतायी और कहा कि उसी घड़े के टूटने की वजह से वह वहॉ आज इके बाजार वाले दिन पानी भरने आयी थी।

जब दोनों उस बुढ़िया के घर पहुँचे तो उस बुढ़िया ने चिका को याम[26] के लिये एक पत्थर दिया और मछली के लिये पेड़ की छाल दी और उससे अपने लिये खाना बनाने के लिये कहा।

चिका ने उससे वे चीज़ें लीं और उनको एक घड़े में रख दिया जो उस बुढ़िया ने ही उसको दिया था। फिर उस घड़े के नीचे उसने आग जला दी।

कुछ पल बाद वह उसको देखने गयी तो उसने देखा कि वह घड़ा तो बहुत ही स्वादिष्ट मछली और याम से भरा हुआ था। उसने वह खाना बुढ़िया और अपने दोनों के लिये परोसा और दोनों ने उसे खाया।

जब वे दोनों खाना खा चुकीं तो चिका को लगा कि काफी समय बीत चुका है सो उसने बुढ़िया से जाने की इजाज़त माँगी।

उसने बुढ़िया से कहा — "मुझे अफसोस है लेकिन अब मैं जाना चाहती हूँ क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि मेरी माँ यह सोचे कि मैं काम से बच रही हूँ। मुझे उम्मीद है कि आप ठीक रहेंगी। मैं आपसे मिलने के लिये फिर आऊँगी।"

[26] Yam is a tuber like vegetable which is a staple food in West African countries. One Yam can weigh up to 10 pounds heavy. See its picture above.

बुढ़िया बोली — "इससे पहले कि तुम जाओ बेटी, अपने लिये इन दो घड़ों में से एक घड़ा लेती जाओ। यह तुम्हारी सहायता के बदले में मेरी एक छोटी सी भेंट है।"

कह कर उसने चिका को दो घड़े[27] दिखाये। एक घड़ा बड़ा था जिस पर फूल पत्ती का डिजाइन बना हुआ था और दूसरा घड़ा छोटा था जो ऐसा लगता था कि उसको बिना मौसम के किसी बिना माली के खेत से तोड़ा गया हो।

चिका ने छोटा वाला घड़ा ले लिया और उस बुढ़िया को धन्यवाद दिया। बुढ़िया बोली — "ठीक है मेरे बच्चे, ठीक से जाओ और खुश रहो।

जब तुम घर पहुँच जाओ तो अपने माता पिता को बुलाना और उनसे अपने घर में थोड़ी सी जगह खाली करने के लिये कहना। जब वे जगह साफ कर दें तब यह घड़ा तोड़ना।

और हाँ, जब तुम घर जा रही होगी तो रास्ते में तुम डुम डुम और चम चम चम की आवाज सुनोगी। पहली आवाज पर तुम किसी झाड़ी में भाग जाना और उस बुरी आत्मा को जाने देना। दूसरी आवाज पर तुम वहाँ से बाहर निकल आना और अपने घर चली जाना।"

---

[27] Translated for the word "Calabash" – Calabash is the dried puter cover of a pumpkin-like fruit to keep dry or wet things. See its picture above.

जैसे ही चिका वहॉ से चली तो उसने डुम डुम और चम चम चम की आवाज सुनी। उस बुढ़िया के कहे अनुसार पहली आवाज पर वह एक झाड़ी में छिप गयी और उसके बाद दूसरी आवाज पर वह वहॉ से बाहर निकली और अपने घर पहुॅच गयी।

घर पहुॅच कर उसने अपने माता पिता से घर में थोड़ी सी जगह साफ करने को कहा। उसकी सौतेली मॉ उस पर देर से आने के लिये चिल्लाने को ही थी कि चिका ने वह घड़ा तोड़ दिया।

तुरन्त ही सारा घर सोने चॉदी, खाना, जानवर और बहुत सारी अच्छी अच्छी चीज़ों से भर गया। उसका पिता यह सब देख कर बहुत खुश हुआ।

पहली बात तो यह कि उसकी बेटी सही सलामत वापस आ गयी थी और दूसरी बात यह कि वह इतना सारा खजाना साथ ले कर आयी थी। उसका प्यार चिका के लिये और बढ़ गया था।

पर चिका की सौतेली मॉ खुश नहीं थी। उसकी इच्छा थी कि उसकी अपनी बेटी यह सब खजाना ले कर घर आती। इस बात के लिये उसको अगले इके बाजार दिन तक इन्तजार करना पड़ा।

इके बाजार के पहले दिन जब सब लोग सोने चले गये तो वह अपने घर के पीछे गयी और पानी के सारे बर्तनों से पानी पलट दिया।

अगले दिन इके बाजार वाले दिन चिका की सौतेली मॉ मुर्गे की पहली बॉग से भी पहले उठी और अपनी बेटी इनूमा को उठा कर उसे नदी से पानी लाने भेजा।

वह उसके ऊपर चिल्लायी — "उठ, तू किसी काम की नहीं। तू हमेशा घर रहना चाहती है और सोना चाहती है जब कि यह दूसरी लड़की अपने पिता का सारा प्यार ले लेगी। जा अभी अभी अपना घड़ा उठा और अपने पिता को खुश कर। तू इससे ज़्यादा बड़ा घड़ा ले कर आना।"

इनूमा बेचारी ने घड़ा उठाया और नदी की तरफ डरती डरती चल दी। रास्ते में उसको भी वह सब मिला जो चिका को मिला था पर उसने उन सबके साथ बहुत ही खराब बर्ताव किया। उसने बिच्छुओं, सॉपों और शेरों से कहा "मेरे रास्ते से हट जाओ।"

उसको नारियल और कपड़ों की घटनाऐं मज़ेदार लगीं और जो बुढ़िया अपने सिर पर चल रही थी वह उस पर हॅस दी।

जब वह नदी के पास पहुॅची तो उस बुढ़िया ने उससे बोलना चाहा पर उसने नफरत से अपनी नाक ढक ली। उसने उसकी कोई सहायता भी नहीं की।

जब बुढ़िया ने उसको अपने घर बुलाया तो वह उसके घर केवल इसलिये गयी क्योंकि उसको उसके घर से वे जादू के घड़े लेने थे। जब बुढ़िया ने उसको याम के लिये पत्थर, मछली के लिये पेड़ की छाल और घड़ा दिया तो वह बहुत भुनभुनायी।

उसने कहा — "कोई इस तरह कैसे रह सकता है। क्या तुम को मालूम नहीं कि ये घड़े जल जाते हैं और खाना पकाने के लिये इस्तेमाल नहीं किये जाने चाहिये? और पत्थर और पेड़ की छाल खाते हुए भी तुमने कभी किसी को सुना है क्या?

और मैं जब अपना खाना अपने आप नहीं बनाती तो फिर मैं तुम्हारे लिये खाना क्यों बनाऊँ?"

इस तरह से इनूमा हर बात में शिकायत करती रही। उसने केवल वही काम किये जो उसके लिये आसान और फायदेमन्द थे।

जब वह वहाँ से जाने लगी तो उस बुढ़िया ने उसको भी दो घड़े दिखाये और बोली — "तुम इनमें से एक घड़ा ले लो। जब तुम रास्ते में डुम डुम की आवाज सुनो तो किसी झाड़ी में छिप जाना पर जब तुम चम चम चम की आवाज सुनो तब वहाँ से बाहर निकल कर अपने घर चली जाना। घर जा कर अपनी माँ से पूछना... ।"

इनूमा ने उसकी बात बीच में काटी — "मुझे मालूम है कि मुझे क्या करना है।" उसने घड़ों की तरफ देखा और उस बुढ़िया से बड़ा वाला और ज़्यादा सुन्दर दिखायी देने वाला घड़ा छीन लिया और अपने घर की तरफ चल दी।

बुढ़िया काँपती आवाज में बोली — "बेटी, शान्ति से जाओ। मुझे तुम्हारे लिये डर लगता है।"

इनूमा घर चल दी। जब वह घर जा रही थी तो उसने सुना डूम डूम डूम। पर वह चलती चली गयी। फिर उसने सुना चम चम चम और वह एक झाड़ी में घुस गयी।

जब वह घर आ गयी तो उसने भी अपनी मॉ से पूरा घर साफ करने के लिये और घर के दरवाजे और खिड़कियॉ बन्द करने के लिये कहा ताकि वे अपना खजाना केवल अपने ही पास रख सकें।

वह अपनी मॉ से बोली — "मॉ, खूब बड़ी सी जगह साफ कर लो क्योंकि मैं तो बड़ा घड़ा ले कर आयी हूँ।"

उसकी मॉ ने जल्दी जल्दी घर साफ किया और घर के दरवाजे और खिड़कियॉ बन्द कीं और इनूमा को घड़ा तोड़ने के लिये कहा। इनूमा ने घड़ा तोड़ा तो उसमें से तो बजाय खजाने के बहुत तरह की बीमारियॉ निकल पड़ीं।

जब इनूमा के पिता ने अपनी पत्नी और बेटी इनूमा को घर में नहीं देखा तो उसने उनके दरवाजे खोले तो वे सारी बीमारियॉ घर में से निकल कर दुनियॉ भर में फैल गयीं। और इस तरह से दुनियॉ में सारी बीमारियॉ फैल गयीं।

चिका हमेशा ही बहुत मेहनती और बहुत ढंग की लड़की रही। जब वह बड़ी हो गयी तो उसकी शादी एक सुन्दर और अमीर राजकुमार से हो गयी और वे दोनों बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

7 आधा आधा[28]

आधे आधे की यह लोक कथा भारत के पंजाब प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह लोक कथा दो ऐसे लोगों की है जो एक ही गॉव में रहते थे और दोनों आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे। एक का नाम था बन्ता सिंह और दूसरे का नाम था घंटा सिंह। ये आपस में एक दूसरे को पसन्द भी बहुत करते थे और एक दूसरे के साथ साथ ही रहते थे।

पर इन दोनों में एक बहुत बड़ा अन्तर था। घंटा सिंह एक चालाक और मौके का फायदा उठाने वाला आदमी था जबकि बन्ता सिंह एक बहुत ही ईमानदार और सीधा सादा आदमी था।

बन्ता सिंह हमेशा उन बातों को मान लेता था जो घंटा सिंह उससे कहता। वह घंटा सिंह के प्लान में कभी फायदे या नुकसान के बारे में नहीं सोचता था।

न तो बन्ता सिंह के पास ही ज़्यादा पैसा था और न घंटा सिंह के पास ही बहुत पैसा था। जाहिर है जब उनके पास ज़्यादा पैसा नहीं था तो उनके पास बहुत ज़्यादा सामान भी नहीं था।

एक दिन घंटा सिंह के दिमाग में एक बहुत ही बढ़िया प्लान आया सो उसने बन्ता सिंह से पूछा कि क्या वह उसके इस प्लान में

[28] Fifty-Fifty – a folktale from Punjab, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/30/fiftyfifty_indian_folktale.htm

उसका साथी बनेगा। जैसा कि हमेशा होता था बन्ता सिंह तुरन्त ही राजी हो गया।

घंटा सिंह ने कहा कि क्योंकि उनके पास बहुत सारा सामान तो हे नहीं तो क्यों न वे अपने सामान को बॉट कर इस्तेमाल करें। वे अपना अपना सामान आपस में बराबर बराबर बॉट लेते हैं।

बन्ता सिंह ने इस विचार से खुश हो कर घंटा सिंह का हाथ इतने ज़ोर से पकड़ कर हिलाया कि उसका हाथ चटक गया।

घंटा सिंह ने एक पल सोचा और फिर बन्ता सिंह से कहा कि उनके पास तीन चीज़ें एक सी थीं। घंटा सिंह के पास एक गाय थी और बन्ता सिंह के पास एक अच्छा गर्म कम्बल था और उसके घर के पीछे बेर[29] का एक पेड़ था। सो वे इन तीनों चीज़ों को आपस में बराबर बराबर बॉट लेंगे।

सीधा सादा बन्ता सिंह घंटा सिंह की चालाकी को भॉप भी नहीं सका और इस बॅटवारे पर राजी हो गया।

घंटा सिंह ने पहले ही सब बॅटवारा कर रखा था। उसने बन्ता सिंह से कहा कि गाय का आगे का हिस्सा बन्ता सिंह का होगा और उसके पीछे का हिस्सा वह खुद ले लेगा।

बेर के पेड़ का तना और जड़ बन्ता सिंह ले लेगा और वह अपना काम केवल उसके पत्ते और टहनियों से ही चला लेगा।

[29] Ber is called wood apple.

और जहॉ तक कम्बल का सवाल है बन्ता सिंह उसको दिन भर अपने पास रख सकता है क्योंकि दिन में घंटा सिंह को उसकी जरूरत नहीं थी।

यह सुन कर बन्ता सिंह ने उसके इस बॅटवारे का विरोध किया कि कम्बल तो वह भी इस्तेमाल करना चाहता था। इस पर चालाक घंटा सिंह बोला कि वह कम्बल केवल रात में ही इस्तेमाल करेगा।

इस तरह से इस बॅटवारे के साथ पहले एक हफ्ता गुजरा। फिर दो हफ्ते गुजरे। और फिर धीरे धीरे एक महीना गुजर गया।

अब बन्ता सिंह को लगने लगा कि घंटा सिंह के बॅटवारे में कहीं कुछ गलत है।

क्योंकि गाय का अगला हिस्सा उसके पास था तो यह उसका काम था कि वह सुबह सुबह उठे और उसको खाना खिलाये। उसके लिये कुॅए से बालटी भर कर पानी भी लाये ताकि वह उसको दो बार ताजा पानी पिला सके।

अब क्योंकि गाय के पीछे का हिस्सा घंटा सिंह का था तो उसका काम केवल उसको दुहने का था। वह रोज सुबह सुबह उसका एक बड़ा गिलास भर कर मखनी दूध पी जाता था। जबकि बन्ता सिंह को चाय का केवल एक छोटा सा गिलास ही मिल पाता।

जहॉ तक कम्बल का सवाल था वह बन्ता सिंह के बिस्तर पर सारा दिन ऐसे ही रखा रहता। वह दिन में तो उसको इस्तेमाल ही

नहीं करता था क्योंकि वह सुबह सुबह ही उठ जाता और फिर सारे दिन अपने काम में लगा रहता। वह उसको कब इस्तेमाल करता।

जब रात होती तो घंटा सिंह उसको उसके पास से ले जाता और उसमें दुबक कर उसकी गर्मी में सो जाता। जबकि बन्ता सिंह को अपने आपको गर्म रखने के लिये रात घुटने पेट में घुसा कर गोला बन कर गुजारनी पड़ती।

बन्ता सिंह अपने पेड़ के बेर खाना चाहता था। महीनों तक उसने अपने पेड़ की सेवा की थी। उसके आस पास की बेकार की घास साफ की थी। उसकी जमीन जोती थी। जब भी उसको जरूरत थी उसको खाद दी थी पानी दिया था। उसके फल उसकी ऑखों के सामने आ रहे थे।

पर जब पहले पहले बेर आये तो घंटा सिंह ने उनको तोड़ कर खा लिया। उसने बन्ता सिंह को एक बेर देना तो दूर उससे एक बार पूछा भी नहीं कि क्या वह बेर खायेगा।

इन सब घटनाओं से परेशान हो कर बन्ता सिंह घंटा सिंह से बहुत लड़ा। इस पर बेशर्म घंटा सिंह बोला कि ऐसा ही तय हुआ था कि बेर के पेड़ की टहनियॉ और पत्ते घंटा सिंह के थे। अब बेर तो टहनियों पर ही लगते हैं इसलिये फल उसी के थे।

बन्ता सिंह इस बात पर नाराज तो बहुत हुआ पर कर कुछ नहीं सका क्योंकि बॅटवारा तो ऐसे ही हुआ था। आखिर परेशान सा वह

घूमने निकल गया। वह चलता गया चलता गया कि चलते चलते वह अपने गॉव के पास वाले जंगल के पास आ निकला।

वहॉ उसे एक साधु मिल गया जिसकी लम्बी लम्बी जटाऐं थीं और उसके सारे शरीर पर भस्म मली हुई थी। साधु ने बन्ता सिंह की तरफ देखा तो देखा कि वह बहुत दुखी सा चला आ रहा था।

साधु ने उससे उसके दुखी होने की वजह पूछी और उसने उसकी सहायता करने का वायदा भी किया अगर वह उसको अपने दुखी होने की वजह बता दे तो।

बन्ता सिंह ने उसको वे सारी घटनाऐं बता दीं जो पिछले कुछ दिनों में हुई थीं। सारी कहानी सुनने के बाद साधु ने कहा कि घंटा सिंह ने उसको धोखा दिया है। उसको अपने दोस्त की बात नहीं माननी चाहिये थी।

तब उसने उसको बताया कि उसको क्या करना है और यह उसको घंटा सिंह को सबक सिखाने के लिये करना ही चाहिये।

सारा प्लान सुन कर बन्ता सिंह बहुत खुश हुआ और खुशी खुशी घर वापस आया। जब शाम को दोनों दोस्तों ने खाना खा लिया तो घंटा सिंह सोने चला। बन्ता सिंह ने कम्बल उठाया उसको पानी में डुबोया और घंटा सिंह को दे दिया।

यह देख कर तो घंटा सिंह तो बस चीख ही पड़ा। उसका यह काम देख कर तो उसको बहुत गुस्सा आया। उसने गुस्से में भर कर बन्ता सिंह से पूछा कि उसने वह कम्बल पानी में क्यों भिगोया।

बन्ता सिंह ने ठंडे स्वर में जवाब दिया कि दिन में तो कम्बल उसका था सो वह उसका जो चाहे वह कर सकता था। चाहे वह पानी में भिगोये या सूखा रखे इससे उसे क्या मतलब।

घंटा सिंह तो यह देख सुन कर इतना आश्चर्यचकित हुआ कि उसका मुँह तो खुला का खुला रह गया।

वह यह सोचने लगा कि आज बन्ता सिंह को क्या हुआ था जो वह उससे ऐसा बर्ताव कर रहा था। पर वह कुछ बोला नहीं। वह बस सोते में बड़बड़ाता रहा हालाँकि वह सारी रात ठंड से काँपता रहा।

अगली सुबह घंटा सिंह उठा और जल्दी जल्दी गाय दुहने चला। अब बन्ता सिंह तो पहले ही जाग चुका था। उसने गाय को चारा भी खिला दिया था और ताजा पानी भी पिला दिया था पर फिर भी वह वहीं घूम रहा था।

घंटा सिंह ने अपने घुटनों के बीच बालटी रखी और गाय को दुहने के लिये बैठ गया। जब उसकी बालटी आधी भर गयी तो बन्ता सिंह ने घास के एक तिनके से गाय की नाक में गुदगुदी कर दी।

बन्ता सिंह के गुदगुदी करने से गाय कूद पड़ी। उसने घंटा सिंह की वालटी में अपनी लात मारी तो बालटी घंटा सिंह के मुँह में जा कर लगी जिससे उसका जबड़ा बुरी तरह जख्मी हो गया।

अब तो घंटा सिंह का गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया और वह बन्ता सिंह पर बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा। इस पर बन्ता सिंह फिर शान्ति से बोला कि गाय का अगला हिस्सा उसका अपना था वह वहॉ कुछ भी करे।

यह सुन कर घंटा सिंह फिर चुप रह गया वह तो कुछ बोल ही नहीं सका। उस सुबह वह अपना बड़ा गिलास भर कर दूध भी नहीं पी सका क्योंकि दूध तो करीब करीब सारा ही बिखर गया था। बालटी में बहुत थोड़ा सा दूध बचा था तो वह उसकी केवल एक छोटा सा गिलास चाय ही पी सका।

जब सूरज थोड़ा और ऊपर चढ़ा तो घंटा सिंह बेर के पेड़ की तरफ चल दिया और उसकी एक डाल पर बैठ कर एक एक कर के उसके बेर खाने लगा। तभी अचानक बन्ता सिंह वहॉ कुल्हाड़ी ले कर आ गया और पेड़ का तना काटने लगा।

घंटा सिंह को बन्ता सिंह के इरादों का पता चल गया तो वह तो बहुत घबरा गया। उसने बन्ता सिंह से पूछा कि वह बेर के पेड़ का तना क्यों काट रहा था इससे तो वह गिर जायेगा।

बन्ता सिंह हॅसा और बोला कि पेड़ का तना तो उसका अपना था वह उसका जो चाहे करे। घंटा सिंह उसको रोक नहीं सकता था।

आखिर घंटा सिंह को पता चल गया कि वह अपने दोस्त को धोखा नहीं दे सकता था। इसलिये उसने अपने इस बॅटवारे में बदल

कर ली। इस बार यह बॅटवारा बन्ता सिंह ने किया और वह क्योंकि बहुत सीधा और एक न्यायपूर्ण आदमी था सो उसका बॅटवारा भी न्यायपूर्ण था।

क्या था उसका बॅटवारा? उसने कहा कि उसका कम्बल एक रात बन्ता सिंह इस्तेमाल करेगा और एक रात घंटा सिंह। गाय की देखभाल भी दोनों करेंगे और दूध भी दोनों आधा आधा बॉटेंगे।

बेर के पेड़ की देखभाल भी वे लोग दोनों एक साथ करेंगे। और फिर जब बेर के पेड़ पर फल आयेंगे तो उनको भी वे आधे आधे बॉट लेंगे।

घंटा सिंह ने इस बॅटवारे को स्वीकार किया। वह बन्ता सिंह के साथ इस तरह से चीज़ें बॉटने पर बहुत खुश था। अब दोनों फिर से बहुत अच्छे दोस्त हो गये थे।

List of Stories in "Stories of Half Things"

1. Little Half Chick
2. Half a Chick
3. Half Rooster
4. Half a Blanket
5. Cloven Youth
6. The Orphan Girl
7. Fifty-Fifty

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022